जवान की दीपावली

[एकाकी-सग्रह]

ब्रज नारायण पुरोहित
एम. ए (हिन्दी, सस्कृत),
एल-एल. बी , पी-एच. डी.

पुरोहित प्रकाशन
बीकानेर

श्री हरदासजी पुरोहित स्मृति-ग्रन्थमाला : पुष्प १

प्रथम संस्करण

अक्तूबर, १९६७

प्रकाशक : पुरोहित प्रकाशन, बीकानेर

मूल्य चार रुपये पचास पैसे

मुद्रक : एजूकेशनल प्रेस, बीकानेर

आवरण शिल्पी . श्री मघाराम भाटी

प्राप्ति स्थान : नवयुग ग्रंथ कुटीर, बीकानेर

दृष्टि : आभार

"जवान की दीपावली" एकाकी-संग्रह में स्वरचित एकादश एकांकी नाटक संगृहीत है। ये एकादश भाव-प्रसून विभिन्न रंगों से युक्त होने पर भी एकीभूत सौरभ को वहन करने मे किस प्रकार समर्थ हुए हैं इसका निर्णय नीर-क्षीर विवेकी सरस्वती पुत्रों पर छोडना ही श्रेयस्कर होगा।

राष्ट्रीय-संकट के समय मे हमारे नेताओ ने उसका सामना एव निवारण करने के लिए दृढता का रुख अपनाया और इस महायज्ञ के लिए प्रत्येक नागरिक की सहयोग-हवि का आह्वान किया। यही आह्वान मुझे कुछ अशों मे झकझोरने का कारणभूत हुआ तथा उसी का परिणाम प्रस्तुत संग्रह के कुछ एकाकी हैं। 'जवान की दीपावली' एकाकी के प्रणयन के प्रसग मे श्रद्धेय श्री मुकुलजी की अमर रचना "सैनाणी" मेरे मानस में उथल-पुथल मचाती रही है।

× × ×

इस विषय में अधिक न लिखकर इतना कहना चाहूगा कि इस संग्रह में जो कुछ है वह मेरे स्व पूज्य पिताश्री, सर्वश्री विद्याधरजी शास्त्री विद्या-वाचस्पति, नरोत्तमदासजी स्वामी, मोहन वल्लभजी पन्त, लक्ष्मी नारायणजी, हर नारायणजी व युगल नारायणजी जैसे समादृत गुरुजनों का ही प्रसाद है। श्री अगरचन्दजी नाहटा व श्री शम्भू दयालजी सक्सेना ने सदैव ही मुझे लिखने की प्रेरणा दी अतः उनका आभार मानना तो औपचारिक ही होगा।

एकाकी-साहित्य के अधिकारी विद्वान् डॉ रामचरणजी महेन्द्र का मैं हृदय से आभारी हू जिन्होने मेरा उत्साह वर्द्धन करने हेतु इसका 'परिदर्शन' लिखने का कष्ट करके शुभाशीर्वाद दिया है।

श्री वीरेन्द्र कुमार सकसना, सचालक एजूकेशनल प्रेस के अनवरत प्रयत्न से यह सग्रह इतना शीघ्र प्रकाशित हुआ है एतदर्थ उनका मैं आभारी हूँ।

× × ×

अन्त म मैं यही निवेदन करना चाहूगा कि यह सग्रह जैसा भी बन पडा है, उसे ही प्रस्तुत कर इस समय सन्तोष का अनुभव कर रहा हू।

—ब्रज नारायण पुरोहित

हिन्दी विभाग,
डूगर कॉलेज, बीकानेर
२ अक्तूबर, १९६७

जिनकी असीम कृपा व शुभा-
शीर्वाद ही इसमें फलित हुआ
है, उन्हीं पूज्य गुरुदेव
नरोत्तमदासजी स्वामी
को सादर समर्पित

—ब्रज नारायण पुरोहित

परिदर्शन

डॉ॰ व्रज नारायण पुरोहित के एकांकियो मे राष्ट्रीय और सामाजिक नवनिर्माण की दृष्टि प्रधान है। आपने अनेक भावो तथा समस्याओ को लेकर मौलिक एकांकियों की रचना की है। प्राय सभी राष्ट्रीय-नैतिक हैं और उनके मूल स्वर मे एक व्यवहारिक आदर्शवाद है। लेखक ने आज के जीवन में से ऐसे मार्मिक क्षण पकडे हैं जिन पर किसी भी प्रबुद्ध लेखक के लिए विचार करना अत्यन्त आवश्यक है। प्रस्तुत सग्रह मे उनके राष्ट्रीय, सामाजिक, पारिवारिक, गावो तथा शहरो से सम्बन्धित एकाकी सग्रहीत हैं।

उदाहरण के लिए 'जवान की दीपावली" एकाकी मे कप्तान राजू-सिह, जो युद्धभूमि से छुट्टी पाकर घर पर दीवाली का उत्सव मनाने आया है, रेडियो द्वारा पुन युद्ध का निमन्त्रण पाकर बिना घर रुके वीरोचित उत्साह मे मातृभूमि का ऋण चुकाने चल देता है। राष्ट्रीय सेवा पर बलि-दान की भावना मार्मिकता से स्पष्ट हुई है। इसी प्रकार "सोना और सकट" एकाकी मे कपिलदेव तथा सेठ की पुत्र-वधू वर्षा, चतुर्भुज और रामभुज आदि पात्र राष्ट्रवादी विचारो के हैं। उनके प्रभाव से स्थानीय कजूस सेठ के मन मे भी मातृभूमि के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है तथा वह मातृभूमि रक्षा-कोष के लिए पर्याप्त सोना देने को उद्यत हो जाता है। "त्याग की बलिवेदी पर" एकाकी मे देश की मौजूदा खाद्यस्थिति का चित्रण हुआ है। अन्न को नष्ट करना जघन्य अपराध माना गया है। इस एकाकी का पात्र रमेशचन्द्र

राष्ट्रीय हितचिन्तन मे लगा है और देश के उद्धार तथा सेवा के लिए अधिकाधिक त्याग करने पर जोर देता है। वह ठीक ही कहता है कि जब तक राष्ट्र पर अन्न-सकट चल रहा है, जब तक देश की खाद्य-स्थिति नहीं सुधरेगी, तब तक हम किसी प्रकार के भोज मे शामिल नही होगे। इस राष्ट्रीय विचारधारा प्रधान एकांकियो मे डा० पुरोहित ने देश मे व्याप्त अनेक महत्त्वपूर्ण विचारो को स्पष्ट किया है। युद्ध-क्षेत्र मे जाने वाले सैनिको का क्या कर्त्तव्य हो और घर पर रहने वाले नागरिक कैसे सैनिको का उत्साह बढायें, उन्हे प्रेरणा दें, उनके मार्गदर्शक बनें, यह अनेक स्थानों पर स्पष्ट हुआ है।

सामाजिक समस्या एकांकियो मे *व्यग्य के द्वारा अनेक सामाजिक* दुर्गुण उभारे गये हैं और जनता का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट किया है। भारतीय समाज आज भी अगणित रूढियो, भ्रान्तियो और विकृतियो का शिकार बना हुआ है। अनेक प्रकार की दुष्प्रवृत्तिया और कुरीतिया आज भी मौजूद हैं। *आज के समाज की कुछ कमजोरियो का चित्रण* "आपने मुझको बेच दिया, फासी का फन्दा, अजी सुना आपने, मेहनताना, मिलन, त्यागपत्र, एक से एक बढकर" आदि एकाकियो मे किया गया है।

'आपने मुझको बेच दिया' एकाकी मे दूषित दहेज-प्रथा पर निर्मम प्रहार है। कमलस्वरूप अपने श्वसुर की दहेज के कारण गिरवी रखी हुई कोठी को अपनी कमाई से ऋणमुक्त करने की प्रतिज्ञा करता है। 'फासी का फन्दा' मे एक चरित्र-भ्रष्ट एस० पी० का *व्यग्यात्मक* चित्रण है जो पुलिस विभाग को बदनाम कर रहे हैं। "अजी सुना आपने" एकाकी मे अस्थायी अध्यापको की दुरावस्था और मानसिक अस्थिरता का चित्रण हुआ है। "मेहनताना" आदर्शवादी रचना है। छोटे आदमी भी बड़े त्याग कर सकते

। हरखू नामक लुहार मानवता की रक्षा के हेतु डूबते हुए बच्चे को बचाने का इनाम नही लेना चाहता। उसकी समुन्नत मानवीय भावना से प्रभावित रोहिणीरमण यह प्रण करता है कि भविष्य मे वह गरीबो के मुकदमे मुफ्त लडा करेगा। लेखक ने एक उच्च आदर्श प्रस्तुत किया है।

'मिलन' एकाकी मे गावों की पचायतो की रूढिवादिता और अन्याय का एक कारुणिक चित्र अकित किया गया है। 'पहले कहते तो ...' एकाकी मे साप पकडने और दूसरों के घरो म छोड कर तग करने वालों का हास्य-व्यग्यमय चित्रण है। 'त्यागपत्र' एकाकी में एक प्रधानाचार्य की अनुदारता का शिकार प्राध्यापक शर्मा विवश होकर नौकरी से ही त्यागपत्र देकर मुसीबतों से छुटकारा पाने की सोचता है। 'एक से एक बढकर' प्रहसन में अशिक्षित पूजीपतियो तथा उनके आसपास रहने वालो की मूर्खताओ का उपहास किया गया है। नाट्यकार ने सभ्य और समुन्नत सामाजिकता की कामना की है। यदि हमे अच्छे नागरिक चाहिए, तो नैतिक प्रवृत्ति को ही विकसित करना होगा और जीर्ण शीर्ण रूढियो और सामाजिक गन्दगी से बचना होगा। यह आदर्शवाद इन एकाकियों मे परोक्ष रूप से मुखरित हुआ है।

वैयक्तिक और सामाजिक त्रुटियों की पकड, उनका मार्मिक चित्रण और मौलिक चिन्तन इन रचनाओ मे प्रकट हुआ है। लेखक का भविष्य उज्ज्वल है और एकाकी के क्षेत्र मे उनसे बहुत आशाए हैं।

गवर्नमेन्ट कालेज,
कोटा (राजस्थान)

—डा० रामचरण महेन्द्र
एम ए, पी-एच डी.

सूचनिका

• •

जवान की दीपावली

• •

पात्र

राजूसिंह	कप्तान
महावीरसिंह	राजूसिंह के पिता
श्रीपत	राजूसिंह का अभिन्न मित्र
उत्तरा	राजूसिंह की पत्नी
मालती	राजूसिंह की छोटी बहिन
मधु	नौकर।

[**स्थान :** कप्तान राजूसिंह का निजी बंगला। चारो ओर फुलवारी मे आवृत्त होने के कारण नैसर्गिक छटा का-सा आनन्द लिया जा सकता है। राजूसिंह की पदोन्नति कुछ माह पूर्व ही हुई है। उसके परिवार के सदस्य हैं—उसके वृद्ध पिता, नव-विवाहिता पत्नी व अविवाहिता बहिन मालती। मालती विद्यापीठ मे एम० ए० का अध्ययन कर रही है।

आज दीपावली का दिन है। चारो ओर प्रसन्नता का साम्राज्य है। सायकाल होने मे अभी घण्टे-डेढ़ घण्टे की देर है। ठण्डी हवा चलने लगी है। अत महावीरसिंह लॉन से उठकर अपने कक्ष मे चले जाते हैं। वे विचार-मग्न हो जाते हैं। पास मे रेडियो से गाने आ रहे हैं। कुछ देर म इन्जिन की सीटी सुनाई देती है। वे घड़ी की ओर देखते हैं और खिल उठते हैं। राजूसिंह छुट्टी लेकर आ रहा है। वह सभवत. इसी गाडी से पहुँचने वाला है। महावीरसिंह (इन्जिन की) सीटी सुन कर उठ खडे होते हैं व कमरे मे टहलने लगते हैं। कुछ देर बाद कोठी के बाहर मोटर का हार्न बजता है। वे उठकर बाहर जाते हैं। उसी क्षण कप्तान मोटर से उतर कर तेजी से चलकर पिता के पाँवों मे गिरता है।]

राजूसिंह : (चरण स्पर्श करते हुए) पिताजी, सादर प्रणाम

करता हू ।

महावीरसिंह (गदगद होकर उठाते हुए) आओ मेरे राजू (सिर पर हाथ फेरते हुए) खुश रहो बेटा युग युग जीओ । क्यों स्वास्थ्य तो ठीक है ?

राजूसिंह आपकी कृपा से सब ठीक है।

महावीरसिंह तुम्हे बधाई है । (गौरव का अनुभव करते हुए) समाचार पत्रो म तुम्हारा चित्र देखा था ।

राजूसिंह (नतमस्तक होकर) यह सभी तो आपका आशीर्वाद ही है । आपकी शिक्षा दीक्षा ही तो मेरा सम्बल है ।

[श्रीपत प्रवेश करता है।]

श्रीपत (प्रवेश करके राजूसिंह के गले से लिपट जाता है । फिर आश्वस्त होकर) क्यो भइया सकुशल हो ?

राजूसिंह हा तुमसे मिलकर अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हू ।

श्रीपत आजकल युद्ध तो बन्द होगा तभी छुट्टी मिली होगी ?

राजूसिंह (कुछ रुककर) बन्द तो क्या हाँ हमारी सबल सेनाओ के सामने शत्रु टिक नही सकते अत घुसपैठिये भेजते हैं किन्तु इसमे क्या उन्हें मुह की खानी नही पडेगी ?

[एक ट म चाय की सामग्री व दूसरी मे नमकीन मिठाई रखकर मधु चला जाता है ।]

श्रीपत (ट्रे को देखकर) वाह खूब ! मैं तो अच्छे शकुन लेकर आया हू ।

महावीरसिंह इसमे शकुन क्या करे । आज तो दीपावली है और फिर राजू के सकुशल आने मे अत्यन्त खुशी है । खाओ पिओ बेटा यह तुम्हारा ही घर है । तुम तो बहुत दिनो क बाद आये हो ।

श्रीपत क्या बतलाऊ पिताजी, समय ही नही मिलता ।

राजूसिंह : (उठकर) आप चाय पीना भूल तो नही गए ?

[राजूसिंह उठकर चाय बना कर एक कप पिता को एक श्रीपत को देता है। एक एक प्लेट नमकीन मिठाई की भी उनके सामने रख देता है फिर स्वय एक कप अपने लिए चाय बनाकर लेता है।]

श्रीपत (चाय की चुस्की लेते हुए) एक बात पूछूं भइया ?

राजूसिंह (कप को रखते हुए) एक क्यो दो पूछो।

श्रीपत तुमको युद्ध मे भय नही लगता ?

राजूसिंह (हसकर) भय ! भय किसका ? • मनुष्यो का ? •••• नहीं नही शत्रुओ का। • वीरता के आगे ••• हा हा शक्ति के आगे भय कापकर भग जाता है। क्यो यही पूछना चाहते हो ?

श्रीपत (सकपकाकर) नही•• • •• फिर हिचकिचाकर •• ••• • क्या वार पर वार देख कर भी तुम • • ?

राजूसिंह अच्छा तो तुम कहना चाहते हो कि क्या हम मृत्यु से नहीं डरते ?

श्रीपत (मौन रहता है।)

राजूसिंह (प्रसन्नता से) तो सुनो। मृत्यु से भय की कौनसी बात है ? *भगवान कृष्ण ने गीता म अर्जुन को कहा है*—'जातस्य हि ध्रुवोमृत्यु ' (जो उत्पन्न होता है उसके लिए मृत्यु निश्चित है) और तुम जानते हो कि घर म रहने से—कही छिपने से—क्या मृत्यु छोड देगी ?

श्रीपत पर मरना कौन चाहता है ?

राजूसिंह प्रिय मित्र भूल रहे हो तुम शेक्सपियर के उस कथन को – 'डेथ इज वट ए नेसेसरी एण्ड'—और फिर युद्ध मे आने पर तो दोहरा लाभ देती है—अपने कर्तव्य पालन से, देश सेवा का व स्वर्ग-प्राप्ति का।

श्रीपत : तुम तो भावावेश मे आ गए। मेरा तात्पर्य था कि बमों के महा-रव से, टैंकों की गड़गड़ाहट से क्या कोई भय नहीं लगता ?

राजूसिह : यही तो भ्रम है (भावावेश मे आकर) गड़गड़ाहट नगाड़ों का प्रतीक बन जाता है। हम शक्ति के अवतार बन जाते हैं उस समय यमराज से लोहा लेने में भी कोई हिचकिचाता नही। फिर युद्ध तो गान सदृश होता है, रणचण्डी का नृत्य साक्षात् लक्षित होता है।

श्रीपत : और खाना-पीना न मिले उस समय ?

राजूसिह : श्रीपत ! तुम नही जानते कि सैनिक के लिए एक ही आदेश होता है— 'मर मिटो।' उस समय उसको न खाने का ध्यान रहता है, न पीने का। वह रणचण्डी का आह्वान करने लगता है। उसके सामने अर्जुन के समान केवल-मात्र चिड़िया की आंख—वह आंख जिस पर उसे निशाना लगाना होता है—रहती है।

महावीरसिह : अरे सायकाल इन मरने-मारने की बातो मे क्यो उलझ पड़े हो ? कुछ दिन तो आराम ······।

राजूसिह : (विनम्रता से बीच मे बोल पड़ता है) पिताजी, क्षमा कीजिए, आराम हराम है। यह जीवन कर्मशाला है। फिर आपका पुत्र होकर आराम का पाठ कैसे पढ़ू ?

श्रीपत : पिताजी, आपने स्वय भी तो रात-दिन "आजाद हिन्द फौज" मे उच्च पद को सुशोभित करते हुए कर्तव्य पालन किया है।

राजूसिह : और बचपन मे दी हुई आपकी शिक्षा मैं भूला नहीं हू। प्राय आप श्रीमुख से नेताजी के उन शब्दों को दुहराया करते थे, 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हे आजादी दूगा' (तमतमा उठता है।)

श्रीपत पर अब तो भारत स्वतन्त्र हो चुका है।

राजूसिंह मित्र ! तुम्हे आज क्या हो गया है ? पढ़े लिखे होकर ऐसी बातें कर रहे हो ? क्या तुम नही जानते कि आज हमारे पडोसी हमारी स्वतन्त्रता पर घात लगाये बैठे है। हमे आज स्वतन्त्रता की रक्षा करनी है, लोकतन्त्रीय व्यवस्था को सुदृढ बनाना है।

श्रीपत (यकायक रेडियो की ओर देखकर) अरे ! रेडियो भी बज रहा है। बन्द कर दू ?

राजूसिंह (भाव बदल कर, कुछ मुस्करा कर) देखा श्रीपत तुमने क्या अब भी नही समझे कि युद्ध की अनुपम बातो को सुनकर जब श्रोता इतना लीन हो सकता है कि पास बज रहे रेडियो के गानो को भी नही सुन सके तो फिर बतलाओ अलौकिक युद्ध-गान का प्रत्यक्ष श्रवण व अनुभव करने वाला क्या अन्य बातें सोच सकता है ?

महावीरसिंह (हस कर) रेडियो तो अपनी ही अपनी कहता है दूसरो की नही सुनता। हजारो व्यक्ति भी यदि 'वन्दे मातरं' कहे तो भी नही सुनता।

[इस पर सब हसते है। श्रीपत रेडियो बन्द करने के लिए उठता है, इतने मे गडगडाहट की आवाज आती है और तत्काल कुछ अस्पष्ट किन्तु जोर की कोई घोषणा सुनाई देती है, इस पर राजूसिंह शीघ्र ही उसके पास पहुच जाता है।]

राजूसिंह (रेडियो के पास खडे होकर ध्यान मे सुनने का उपक्रम करते हुए) हैं ···· हैं ······यह क्या ?

[रेडियो से स्पष्ट घोषणा सुनाई देती है।]

श्रीपत · क्या है भइया ?

राजूसिंह (चुप रहने का इशारा करते सुनता है) 'अभी अभी

पाकिस्तानी सेनाओं ने टैंकों आदि से लैस होकर हमारी सीमा पर बहुत बड़ा आक्रमण करके युद्ध की स्थिति उत्पन्न कर दी है, इसलिए छुट्टी पर गए हुए सेना के सभी जवानों, अफसरों तथा कर्मचारियों को सूचित किया जाता है कि वे शीघ्रातिशीघ्र अपनी रेजीमेण्ट पर उपस्थित हो।''' ' इसे सरकारी आदेश समझा जाय।'
(''' ' सुनकर उत्साह के साथ तो अब अवसर है अपना बल-पौरुष दिखाने का। दुष्टों ने '' '''भावावेश मे उठ खड़ा होता है।)

श्रीपत (किंकर्तव्यविमूढ सा होकर) *क्या तुम भी जाओगे ?*

राजूसिंह (उल्लसित होकर) इसमें पूछने की क्या बात है ? मैं अभी घण्टे-डेढ़ घण्टे मे स्टेशन पहुँच जाऊंगा और एक्स प्रेस से रवाना हो जाऊंगा।

श्रीपत : क्या अभी ? (आश्चर्य से) दिवाली के दिन !

राजूसिंह दिवाली ? दृष्टिकोण की भिन्नता है। मैं भी दिवाली मनाने जा रहा हूं।

श्रीपत : पर युद्ध-क्षेत्र मे दिवाली कैसे मनेगी ?

राजूसिंह कैसे मनेगी ? जवान की दिवाली जानते हो कैसे मनती है ? उसके लिए स्नेह (तेल) नागरिकों के हृदयों मे उमड़ता रहता है। स्नेह से परिपूर्ण हृदय दीपों मे भावनाओं की—सद्भावनाओं की—बत्ती प्रज्वलित होकर चक्षु मार्ग से लौह को प्रकाशित करती है और वह अनुपम प्रकाश—सैनिक का उत्साह बढाते हुए प्रेरणा-स्रोत व मार्ग-दर्शक बन जाता है।

श्रीपत ' किन्तु घर आकर बिना दीपावली मनाये जाना''''''

राजूसिंह : (टोक कर) क्या अब भी तुम्हारी समझ में नहीं आया कि सैनिक की दीपावली विजय में मनाई जाती है। फिर

उसके लिए प्रत्येक दिन दीपावली होता है।

महावीरसिंह : शाबाश मेरे लाल—मेरे क्या मातृ-भूमि के लाल—माता के दूध की लाज रखना (कुछ सोचकर, भावावेश में उठ कर), हां तो मैं पुत्री उत्तरा को यह शुभ संदेश सुनाता हूं—सुनाता हूं कि आज एक खरा मोती परीक्षण के लिए ले जाया जा रहा है। (घर में चला जाता है।)

राजूसिंह : श्रीपत ! अब हमें शीघ्रता करनी चाहिए। (बाहर झांककर) हैं—दीया-बत्ती का समय हो गया !

[राजूसिंह उठकर द्वार तक आता है, उसी समय उसकी पत्नी उत्तरा प्रवेश करती है। उसके हाथ में दीपों से सुसज्जित थाली है। थाली के बीच में कुंकुम-केसर रखे हैं व धूप सुवासित हो रहा है।]

उत्तरा : (प्रवेश करके सकुचाती हुई) देव ! इस शुभ वेला में पूजा स्वीकार करें। (आरती उतारती है) आज का शुभ दिन इस घड़ी से और भी मंगलकारी हो गया है। (आंसू छलक आते हैं।)

राजूसिंह : प्रेमाश्रु बहाते हुए) उत्तरे ! कृतकृत्य हुआ। तुमने अपना नाम सार्थक किया।

उत्तरा : देव ···

राजूसिंह : देवी ! मुझे याद आता है उत्तरा-अभिमन्यु का वह पावन-मिलन—युद्ध में जाते हुए अभिमन्यु का उत्तरा द्वारा अर्चन-पूजन। इस थाली में प्रकाशित बत्तियां मेरा मार्ग-दर्शन करेंगी, अन्धकार में प्रकाश दिखायेंगी। उत्तरे···!

[मालती हाथ में सूटकेस लिए हुए प्रवेश करती है।]

मालती : (अभिवादन करके मुस्कराती हुई) क्या दीपावली मनाई जा रही है ?

राजूसिंह : हां, तुम भी आओ।

मालती . भइया, कब आए ? दीपावली पर आकर अच्छा किया, अब आनन्द से मनायेंगे।

राजूसिंह आज ही आया हू, और आज ही जा रहा हू।

मालती (आश्चर्य से) कहा ?

उत्तरा (कुछ लजाकर) जहा से आए हैं।

राजूसिंह इसमें विशेष बात क्या है। यह आने जाने का क्रम तो जारी ही रहता है।

मालती (आश्चर्य से) तो क्या युद्ध स्थल मे ?

राजूसिंह · (वस्तुस्थिति समझाकर) और अब जा रहा हू मातृ-ऋण चुकाने के लिए, अपनी परीक्षा मे सफल होने के लिए। एक अलौकिक दीपोत्सव मनाने के लिए। (जाने को उद्यत होता है।)

मालती . (कुछ विचार कर)—भइया······ ! (इतना कहकर सूटकेस खोल कर जेब से छोटा-सा चाकू निकाल कर सोल्लास अपने अगूठे को चीरती है। उससे रक्त निकलने लगता है।) तो लो भइया, भैया-दूज के शुभ एव पावन अवसर का तिलक अभी कर दू (तिलक करती है—उसकी आखें गर्वोन्नत हो जाती है जिनसे तेज चमकने लगता है। दो अमूल्य मोती ढुलक आते हैं) इस तिलक की लाज रखना भइया ! अपनी असख्य बहिनो की भावनाओ··········। (कण्ठ अवरुद्ध हो जाता है।)

राजूसिंह (मालती के सिर पर हाथ फेर कर सिर सू घता है, फिर रुधे हुए कण्ठ से) मालती·· जवान की दी···पा···।

[पटाक्षेप]

• •

आपने मुझको बेच दिया

• •

पात्र

विष्णु प्रसाद	एडवोकेट (अभिभावक)
प्रभा	विष्णु प्रसाद की पत्नी
भगवानदास	विष्णु प्रसाद का सजातीय
रामू	विष्णु प्रसाद का पुत्र
माया प्रसाद	विष्णु प्रसाद का मित्र
कमल स्वरूप	विष्णु प्रसाद का दामाद
मनोहर प्रसाद	कमल स्वरूप का पिता
वधू	कमल स्वरूप की नवविवाहिता पत्नी
पण्डित	विवाह-संस्कार सम्पादन कराने वाला

दृश्य १

[बाबू विष्णु प्रसाद की कोठी। आधुनिक ढग की साज-सज्जा मे सुसज्जित, सामने उग रही दूर्वा के कारण इसकी शोभा मे कुछ वार्धक्य लक्षित होता है।

सन्ध्या-काल होने वाला है। कचहरी से आकर विष्णु प्रसाद अपनी बैठक मे बैठ जाते है। बैठक मुख्य दरवाजे के दाहिनी ओर है। वे आराम-कुर्सी पर लेट जाते हैं। आखो को मूदकर वे अपने आपको भूलना चाहते हैं। उसी समय उनकी पत्नी प्रवेश करती है।]

प्रभा : (प्रवेश करके) आप इतने चिन्तित क्यो दिखाई देते हैं ?

विष्णु प्रसाद : (चौंक कर सम्हलते हुए) नही, कुछ नही, वैसे ही आराम कर रहा था।

प्रभा : यो ही क्या ? मैं कुछ दिनों से देख रही हू कि आप अत्यन्त व्यग्र रहते है। स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिर रहा है, आप इस ओर ध्यान तक नही देते। आखिर...

बात क्या है ?

विष्णु प्रसाद (नि श्वास छोड़कर) प्रभा ! क्या बताऊ ? मैं समझता हू कि मेरा अन्त निकट आ गया है। मामा जिन कुरीतियों से बाधित व्यक्ति के लिये इस समाज म आश्रय का स्थान कहा है ? आज समाज क नियमों द्वारा समाज म व्यक्तियों का ही शोषण हो रहा है सभी देखत हुए भी अनदखा कर रहे हैं।

प्रभा क्या समाज की चिन्ता करन वाल हम ही बचे हैं ?

विष्णु प्रसाद पर हम पर भी उत्तरदायित्व है। जब घर म आता हू और कान्ता को देखता हू तो सिर भन्नाने लगता है।

प्रभा (जैसे कुछ स्मरण करके) कान्ता की चिन्ता तो मुझे भी दिन रात लगी रहती है। आखिर उसके हाथ तो पीले करने ही होंगे।

विष्णु प्रसाद केवल हाथ पीले करने मात्र से काम नही चल सकता। इससे अधिक बहुत कुछ करना पड़ेगा।

प्रभा परन्तु आप प्रयत्न भी तो नही करते। कचहरी म बैठते हैं आपको प्राय समाज के सभी लोग जानते हैं।

विष्णु प्रसाद यहा तो रोग है। वकील समझकर और इस कोठी को देखकर समाज अधिक से अधिक शोषण करना चाहता है।

प्रभा शोषण ?

विष्णु प्रसाद हा, लडके वाले मु ह मागा दहेज चाहते हैं। मेरी चौदह वर्ष की कमाई मे बनाई हुई यह कोठी उन्हें अखरती है। वकील, डाक्टर तो जैसे करोडपति समझे जाते हैं।

प्रभा : बात तो सही है। (कुछ हसकर) वकील मुर्दों से भी

तो पैसे उधार लेते है।

विष्णु प्रसाद : पर उन्हे क्या पता कि आज अधिकतर वकील तो ऐसे होते हैं जो बार-रूम की कुसियों को सफल बनाने के लिये कचहरी जाते हैं। घर लौटते समय यदि उनकी जेबों की तलाशी ली जाय तो सब्जी के पैसे मिलने भी कठिन हैं। आजकल तो हम जैसो के लिये भी बड़ी विकट समस्या है।

प्रभा : जाने दीजिये इन बातों को। (कुछ स्मरण करके)— आज बाबू राम प्रसादजी से बात नही हुई क्या ? कल आपने आज के लिये कहा था न ?

विष्णु प्रसाद : (मानसिक उद्वेलन मे फस जाते हैं) ········हा, वे आए तो थे, किन्तु न जाने मैं उस समय किस मूड मे था कि सारा काम चौपट हो गया।

प्रभा : (अत्यन्त खिन्न होकर) चौपट हो गया ? यह क्या किया आपने ? आप तो समझदार है।

विष्णु प्रसाद : (कुछ रुक कर) क्या बताऊं प्रभा, उसकी बातों ने मुझे झकझोर दिया।

प्रभा : परन्तु चतुराई से काम बनाते, ऐसा उन्होने क्या कहा ?

विष्णु प्रसाद : उन्होंने कहा कि हम दहेज के रूप मे रोकड़ो तो कुछ नही लेंगे। आपका और हमारा तो खीर-खाड का मेल है। हा, लडके की पढाई का खर्च विवाह के बाद से आपको सम्हालना होगा। उसे इन्जीनियर बनाना है।

प्रभा : इस पर आपने क्या कहा ?

विष्णु प्रसाद : मैंने कहा कि लडका कमाकर फिर कमाई भी मुझे देगा ? इस पर वे बिगड गये।

प्रभा : बात तो ठीक कही आपने, परन्तु यह कड़वा सत्य है।

फिर तो व चल गए होंगे ?

विष्णु प्रसाद नही जब वे उठने लग तो मैंने उन्हें किसी प्रकार बैठाया।

प्रभा यह तो अच्छा किया आपने। फिर क्या बातचीत हुई?

विष्णु प्रसाद क्या बताऊ उन्होंने कहा कि आभूषणो के बारे में हम कुछ नही कहते। लडकी आपकी है जो कुछ आप दगे आपके घर मे ही रहेगा। विवाह तो आप अपनी प्रतिष्ठा के अनुसार करेंगे ही। समाज की रूढि थोडे ही तोड़ेगे ?

प्रभा तो फिर इसमे बतलाने की क्या बात है ?

विष्णु प्रसाद आज तो सभी उपदेशक बने हुए हैं। फिर कहा कि लडके को क्या पहनाओगे ?

प्रभा पहनावेंगे क्या से क्या तात्पर्य ?

विष्णु प्रसाद यही तो मैंने उनसे पूछा।

प्रभा तो उन्होने क्या बतलाया ?

विष्णु प्रसाद बताया कि लडके को सात आठ तोल सोने की जजीर पहनाइयेगा या कम से कम पहनाना चाहे तो अच्छी से अच्छी घडी पहनानी पडेगी।

प्रभा ये लोग यह क्यो भूल जाते हैं कि उनके भी लडकिया होती हैं। उस समय तो गरीब बनते हैं। क्या हमारी सामर्थ्य है कि हम इतना खर्च वहन करें ?

विष्णु प्रसाद (निश्वास छोडते हुए) प्रभा मैंने उस नर पिशाच को आवेश म आकर कहा कि लालाजी मैं तो हथकडी पहनाना जानता हू। हथकडी पहनवा सकता हू क्योंकि दहेज मागना अपराध है। एक जघन्य सामाजिक अपराध और दूसरी चीज पहनाना वहनाना मैं कुछ नही जानता।

प्रभा वे तो समाज सुधार की बातें किया करते हैं।

विष्णु प्रसाद : मैंने भी उन्हें लताड़ा कि आप समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति होकर ये बातें करते हैं। आप एक ओर तो 'जातीय संदेश' में सुधारवादी बनकर आदर्शवादिता के बड़े-बड़े लेख प्रकाशित करवाते हैं और दूसरी तरफ आपकी ये करतूतें !

प्रभा (क्रोध से कांपती हुई) ठीक कहा आपने, बिल्कुल ठीक। और क्या कहा ?

विष्णु प्रसाद ' बस, वे उठकर तेजी से चले गये।

प्रभा तो और कोई सम्बन्ध देखिये।

विष्णु प्रसाद (कुछ रुककर, स्मरण करते हुए) हां तो अभी लाला भगवानदास आने वाले हैं। उनका भतीजा विवाह योग्य है।

प्रभा : आप ही जाकर मिल लेवें।

विष्णु प्रसाद : वे ही आवेंगे और अवश्य आवेंगे क्योंकि उन्हें कुछ कानूनी राय लेनी है। (घड़ी देखकर) ओह सात बज चुके हैं। बातों में समय का तो पता ही नहीं लगता।

प्रभा ' समय बीतते क्या देर लगती है।

विष्णु प्रसाद बीता हुआ युग भी कल जैसा लगता है और आने वाला कल युग के समान लम्बा हो जाता है।

प्रभा : आपकी ये बातें मेरे तो समझ में नहीं आतीं।

[इतने में मोटर का होर्न बजता है। विष्णु प्रसाद दरवाजे से झांकते हैं। फिर लाला भगवानदास को कोठी में प्रवेश करते देखकर उठकर कमरे से बाहर जाते हैं। प्रभा रसोई में चाय तैयार करने चली जाती है।]

विष्णु प्रसाद : (भगवानदास से हाथ मिलाते हुए) नमस्ते लालाजी,

आइये, बडी कृपा की आपने !

भगवानदास . नमस्ते जी ! इसमे कृपा की क्या बात है ? यह मैं तो अपना ही घर है ।

विष्णु प्रसाद यह तो ठीक है । फिर (आवाज देते हैं) रामू, अरे रामू !

रामू (प्रवेश करके) फरमाइये, बाबूजी ।

विष्णु प्रसाद जा कुछ चाय-वाय तो ला ।

भगवानदास (बीच मे बोलकर) नही-नही, यह संकोच मत कीजिये । फॉरमेलिटी की आवश्यकता नही ।

विष्णु प्रसाद इसमे फॉरमेलिटी की क्या बात है ? आप कब कब पधारेंगे ।

[आदेश पाकर रामू चला जाता है ।]

भगवानदास (कुछ सोचकर) तो बाई पढ रही होगी ?

विष्णु प्रसाद (सम्हल कर बैठते हुए) हा, प्रथम वर्ष विज्ञान मे पढ रही है । गृह-कार्य मे दक्ष है । आप देखना चाहेंगे ?

भगवानदास नही नही अपन आजकल के लोगो जैसे नही है कि लडकी को देखें ।

विष्णु प्रसाद नही इसमे कोई विशेष बात नही । आप भी तो उसके लिए पूज्य हैं ।

भगवानदास (चश्मे की डंडी ठीक करते हुए) ठीक है, अब काम की कुछ बात कर लें ।

विष्णु प्रसाद (नीची गर्दन करके) फरमाइये ?

भगवानदास देखिये वकील साहब, हम औरों की तरह भाव-तोल करना नही जानते । आज युग ही ऐसा आ गया है । महगाई का बोलबाला है शिक्षा पर अत्यधिक खर्च करना पड़ता है । फिर पढ़े लिखे लडको की

फरमाइशें ·········

विष्णु प्रसाद (क्रोध को रोक कर) आप कहना क्या चाहते हैं ?

भगवानदास : कुछ नहीं । यही कहना चाहता हूं कि आपका समाज में नाम है। अधिक नहीं तो दो हजार का टीका होना ही चाहिये । घर-गृहस्थी के सामान की कहने की आवश्यकता नहीं। (कुछ रुककर) हां तो ट्रांजिस्टर व स्कूटर तो आजकल सभी देते ही है।

विष्णु प्रसाद : (आवेश में आकर) और कफन के पैसे भी ससुराल वाले पहिले से ही दे देते हैं। यह भी समझ लीजिये · ······

[यह सुनकर लाला भगवानदास शीघ्रातिशीघ्र बाहर निकल जाते हैं और मोटर में बैठ कर प्रस्थान कर देते हैं। विष्णु प्रसाद भी बाहर दूब में आकर टहलने लगते हैं।]

विष्णु प्रसाद : (टहलते हुए)········· क्या समय आया है। सभी जैसे आसुरी वृत्तियों के दास हो चुके हैं। मानवता को दानवता ने दबोच लिया है। ये लोग भगवान से भी नहीं डरते। (रुआंसा होकर)··········मैं ··········मैं ·········कहां से लाऊंगा इतने रुपये ? ··········हां तो इज्जत बेचकर ? नहीं··········नहीं गिरवी रखकर ······ लड़की के हाथ तो पीले करने ही पड़ेंगे। (कुछ रुककर)··········ठीक है······· यह कोठी गिरवी रख दूंगा।··········समाज लड़के का जो मूल्य मांगेगा, वही दूंगा। लड़की के उत्पन्न होने का जो दण्ड दिया जावेगा उसे सहन कर लूंगा। (कुछ याद करके)··········अभी माया प्रसाद आने वाला होगा।··· ······अब········· अब······· नहीं,

अधिक विलम्ब ठीक नही । पर मैं कैसे ऋण मुक्त होऊंगा ? लडकी के जन्म लेने का यह दण्ड तो बहुत अधिक है । हे भगवान !............(धम्म से बैठ जाता है ।)

[माया प्रसाद प्रवेश करता है ।]

माया प्रसाद क्यो, क्या बात है ? सुस्त कैसे बैठे हो ?

विष्णु प्रसाद (भाव बदलकर) सुस्त कहा हू ? वैसे ही प्राकृतिक सौंदर्य के अवलोकन मे मग्न हो रहा था । तुमने देरी कर दी ।

माया प्रसाद देरी क्या ? पहले तो वे मिले नही फिर बडी मिन्नत की, तब कही जाकर कुछ बात की । परन्तु .....।

विष्णु प्रसाद (बीच म) परन्तु क्या ? स्पष्ट कहो न कि दहेज देना पडेगा । कितना खर्च लगने की सम्भावना है ?

माया प्रसाद (हिचकिचाते हुए) मित्र, (फिर रुक जाता है) मैं तुम्हारी परिस्थिति जानता हू ।

विष्णु प्रसाद किन्तु वे राक्षस तो इम पर ध्यान नही देते । वे तो पुत्र जन्म को 'लॉटरी' समझते हैं । तुम तो पूरी बात बताओ ।

माया प्रसाद क्या बताऊ......दस हजार के करीब खर्च गिनाया है, आगे.........।

विष्णु प्रसाद आगे क्या ? जाकर कह दो कि स्वीकार है । माया प्रसाद का हाथ पकडते हुए) प्रिय मित्र जाकर कह दो कि स्वीकार है । विवाह भी शीघ्र कर दिया जायेगा । मैं रुपयों का प्रबन्ध कर लू गा ।

माया प्रसाद (सिसकिया भरते हुए) विष्णु.........पर......

विष्णु प्रसाद (आसू गिरते हैं, फिर माया प्रसाद को गले लगाते हुए) क्या तुम नहीं मानोगे ?.........मान जाओ,

मित्र, जाओ, अभी जाकर उन्हें स्वीकृति दे दो। वे जैसा कहेंगे, वैसा ही होगा।

[माया प्रसाद का प्रस्थान]

[पर्दा गिरता है]

दृश्य २

[स्थान : वही। बाबू विष्णु प्रसाद के आंगन में विवाह-मण्डप रचा हुआ है। वर-वधू यथास्थान बैठे हैं। पण्डित विवाह करा चुके हैं व अपनी भेंट-दक्षिणा आदि सामग्री को दुपट्टे में बांध रहे हैं। हवन का धूम्र मांगलिक-वातावरण को सुवासित कर रहा है। विष्णु प्रसाद व उनकी पत्नी प्रभा उठकर अन्य कार्यों में लग जाने को तैयार हो रहे हैं। मंगल-गीत गाये जा रहे हैं।

विष्णु प्रसाद प्रसन्न दिखाई दे रहे हैं, पर वस्तुत उनका मन भीतर से बहुत खिन्न है।

मण्डप के पास वर के पिता जाकर वर-वधू को आशीर्वाद देते हैं। कमल स्वरूप चुप रहता है। उसके हृदय-सागर मे दावाग्नि धधक रही है। दूसरी ओर उसके पिता फूले नही समाते, बधाई देने वालो को रुपये बाट रहे हैं।]

मनोहर प्रसाद . (विष्णु प्रसाद से) वकील साहब, जरा शीघ्रता कीजिये।

विष्णु प्रसाद जो आज्ञा ! (अन्दर जाने का उपक्रम करते हैं।)

मनोहर प्रसाद (पुत्र से) उकता तो नही गए ? अब तो थोडी ही देर है। कुछ रस्मे बाकी हैं।

कमल स्वरूप : (उठते हुए) फिर क्या कोई रस्म रह गयी है ?

मनोहर प्रसाद : हा, बिरादरी का काम तो ढग से ही होगा। फिर घर चलेंगे। (हंस कर) इतनी उतावल क्यो कर रहे हो ?

कमल स्वरूप (आवेश मे आकर) करवा लीजिये रस्म पूरी और फिर घर चले जाइये। किसी रस्म की मन मे नही रह जाय आपके ?

मनोहर प्रसाद . (अचम्भित होकर) कमल क्या कह रहे हो ? क्या हो गया तुम्हे ?

कमल स्वरूप : नही, कुछ नही, आप चले जाइये यह सारा सामान लेकर।

मनोहर प्रसाद : कमल ! बेटा·········बिरादरी को·········)

कमल स्वरूप : नहीं और लूट लीजिये, डाका डाल लीजिये। (सासने

लगता है।)

मनोहर प्रसाद : कमल ! मेरे लाल ······तुम्हें·········

कमल स्वरूप : अब मैं आपका कमल नहीं······नहीं, कदापि नहीं। आप मुझे बेच चुके हैं। मेरा आना-पाई समेत मूल्य वसूल कर चुके हैं। आप स्वयं मानदार बन चुके हैं, पर आपको क्या पता कि एक भद्र पुरुष को आप रंक बना चुके हैं। आप उनकी इज्जत आबरू लूटने पर उतारू हैं। आप······(होंठ फड़कने लगते हैं।)

मनोहर प्रसाद · (कांपते हुए)······कमल······इसमें इज्जत लूटने की क्या बात है ? बेटा देकर बेटी ली है।

कमल स्वरूप · यही तो मैं कह रहा हू कि आपने मुझे बेच दिया है। ठोक बजाकर, मेरा मूल्यांकन करवाकर, बढ़े सो पावें करवाकर मेरा विक्रय कर चुके हैं। वह मूल्य एक भद्र पुरुष को कितना महगा पड़ा है, आप नही जानते उस मूल्य के बदले मेरे श्वसुर की·········नहीं· · नहीं ···अब से ······ मेरे पिता की यह कोठी— जिसमें से उनके खून पसीने की कमाई मुझे फटकार रही है, गिरवी रखी गई है। (धम्म से अपने स्थान पर बैठ जाता है।)

(सभी उपस्थित व्यक्ति चित्र-लिखित से खड़े रहते हैं।)

मनोहर प्रसाद : बेटा······कमल··· ! पर · (कमल का हाथ पकड़ना चाहता है।।

कमल स्वरूप नहीं······नहीं ·····अब आपका बेटा नहीं रहा। इस कोठी को गिरवी रखवाने का कारण मैं ही हू।

इसलिये अपनी कमाई मे पहले इसे ऋणमुक्त करके फिर आपके घर आऊगा, पहले नही कदापि नही ...आप अब जा सकते हैं। जा...इ.. ये ।

[पटाक्षेप]

• •

फांसी का फन्दा

• •

पात्र

न्यायाधीश	सत्र एवं जिला न्यायाधीश
मोहिनीमोहन	प्रसिद्ध एडवोकेट, रामदत्त अभियुक्त के अभिभाषक
राजकीय वकील	राज-वकील, पब्लिक-प्रोसीक्यूटर
रामदत्त	अभियुक्त
बुरका-युक्त औरत	साक्षी (बचाव-पक्ष)
चपरासी	न्यायालय का चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

[स्थान : सत्र-न्यायालय का विशाल-कक्ष जिसके दो प्रवेश-द्वार हैं। दोनो द्वारो पर चिकें लगी हैं। प्रवेश करते ही दर्शक दीर्घा है जहा कुछ बेंच पडी हैं। द्वार से लगभग पन्द्रह कदम की दूरी पर बीच मे एक मेज लगी है जिसके पास कुर्सिया पडी हैं। यह स्थान अभिभाषको के लिए है। सामने लकडी का एक बडा चबूतरा बनाया हुआ है और उस पर बडी मेज रखी हुई है जिसके पास सामने की ओर न्यायाधीश महोदय की कुर्सी लगी हुई है। मेज के बाई ओर पेशकार व दाहिनी ओर शीघ्रलिपिक के बैठने का स्थान है। मेज पर मेजपोश लगा हुआ है।

अभिभाषकों के खडे होने के स्थान के दोनो ओर अभियुक्तो के खडे होने के लिए लकडी के कठघरे बने हुए हैं।

मुख्य कक्ष से सटा हुआ न्यायाधीश का चेम्बर' है। दस बजे से ग्यारह बजे तक कार्यालय के कागजों पर हस्ताक्षर करने के लिए न्यायाधीश महोदय 'चेम्बर' मे बैठते हैं। मुख्य-कक्ष तथा चेम्बर के बीच म एक द्वार है जो पर्दे से ढका रहता है। न्यायाधीश महोदय के आने-जाने का यही रास्ता है।

घडी के ग्यारह टकारे लगाते ही न्यायाधीश महोदय 'चेम्बर' से

न्यायालय मे प्रवेश करते हैं। सभी उपस्थित व्यक्ति खडे होकर अभिवाद करते हैं। व अभिवादन का उत्तर देते हुए अपने आसन पर आसीन हो जाते हैं और डेली-कॉज लिस्ट (फ़हरिश्त मुकदमात) देखते हैं।]

न्यायाधीश (घण्टी बजाते हैं, फिर चपरासी के प्रवेश करने पर) पण्डित मोहिनीमोहन एडवोकेट व राजकीय वकील को आवाज लगा दे और फिर हवालात से रामदत्त को बुला ला।

[चपरासी आवाज लगाता है जिसे सुनकर *मोहिनीमोहन व राजकीय वकील प्रवेश करते है।* उनके साथ ही साथ लगभग चालीस व्यक्ति और प्रवेश करते है, जो दर्शक दीर्घा मे बैठ जाते है। वे उदास-मुद्रा से काना-फूसी कर रहे है कि रामदत्त अब कुछ ही दिनो का मेहमान है, बेचारे को फासी के फन्दे पर लटकना पड सकता है।]

मोहिनीमोहन (पास आकर अभिवादन करते हुए) श्रीमान् ने याद फरमाया ?

न्यायाधीश हा, रामदत्त वाले मुकदमे मे बुलवाया है। (राजकीय-वकील की ओर देखकर) क्यो पी पी साहब, आप तैयार हैं ?

राजकीय-वकील जी हा।

[इतने मे कक्ष के बाहर हथकडी खुलने का शब्द होता है। कुछ क्षणों मे दो पुलिस वाले रामदत्त के साथ प्रवेश करते हैं। एक ने उसका हाथ पकड रखा है। दूसरा पीछे पीछे चल रहा है। दोनो चबूतरे के निकट पहुँच कर सेल्युट करते हैं। रामदत्त कटघरे मे घुस कर सिर झुका कर

अभिवादन करता है।]

न्यायाधीश (हाथ उठाकर अभिवादन का उत्तर दते हुए रामदत्त की ओर देखते हैं) आज तुम्हारा कथन अंकित किया जावेगा अत प्रत्यक प्रश्न को ध्यान से सुन व समझ कर उत्तर देना।

रामदत्त (सिर नीचा करके चुपचाप गभीर मुद्रा में खडा रहता है।)

न्यायाधीश : (टंकित-पत्रो को हाथ मे लेकर पढते हुए) नाम तुम्हारा ?

रामदत्त जी, रामदत्त।

न्यायाधीश पिता का नाम ?

रामदत्त जी, श्री देवादत्त।

न्यायाधीश जाति ?

रामदत्त हिन्दू।

न्यायाधीश व्यवसाय ?

रामदत्त राजकीय सेवा पर अभी निलम्बित किया हुआ हू।

न्यायाधीश निवासी ?

रामदत्त यही का।

न्यायाधीश (प्रश्न को पढते हैं) तुम्हारे विरुद्ध यह अभियोग लगाया गया है कि तुमने दिनाक ३ व ४ जनवरी, सन् १९६४ ई० की मध्य रात्रि म श्री बाल किशोर की उसके मकान म प्रविष्ट होकर हत्या की। तुम्हे इसके विषय मे क्या कहना है ?

रामदत्त यह अभियोग बिल्कुल झूठा है।

न्यायाधीश साक्षी सख्या एक विद्यावती का कहना है कि घटना के समय उसने अपने पति के चिल्लान की आवाज सुनी और वह तुरत जगी तो तुम्हे लाठी

मे उसे मारते देखा। उसने छुड़ाना चाहा पर तुमने उसे भी जान से मारने की धमकी दी। इस पर उसने जोर-जोर से 'मारे रे, मारे रे' चिल्लाना आरम्भ किया। उसने ऐसा क्यों कहा है?

रामदत्त : बिल्कुल झूठ कहा है। इसके बारे में मैं आगे बतलाऊगा (कुछ रुक कर) नहीं तो सफाई के गवाह से भण्डाफोड करवा दूंगा।

न्यायाधीश : साक्षी संख्या दो महीदत्त का कथन है कि उसका *मकान बाल किशोर के मकान से सटा हुआ है।* घटना के समय उसने रोने-चिल्लाने की आवाज सुनी और वह बाल किशोर के मकान के द्वार तक पहुँचा ही था कि तुम उसके मकान मे से निकलते हुए दिखलाई दिये। तुम्हारे हाथ मे लाठी थी। *उसने तुम्हे रोकना चाहा पर तुम भाग गए।* इस के लिए तुम्हें क्या कहना है?

रामदत्त : गवाह झूठ कहता है। इससे मेरी शत्रुता है। इसके विरुद्ध जूए के मुकदमे मे मैंने साक्षी दी थी जिसमे उसे पचास रुपये जुर्माने की सजा हुई थी। इस *तथ्य को वह स्वय स्वीकार कर* चुका है। इसी कारण उसने झूठी गवाही दी है।

न्यायाधीश : साक्षी महिमदत्त का कथन है कि ३ जनवरी को शाम के करीब सात साढ़े-सात बजे तुम्हारी बाल किशोर से रुपयो के लेन-देन के विषय मे लड़ाई हो रही थी। उसने तुम्हे छुड़ाया उस समय तुम उसे (बाल किशोर को) यह चेतावनी दे गए थे कि अभी बच गए तो क्या हुआ, सावधान रहना जान से मार दूंगा। यह गवाह तुम्हारे विरुद्ध

क्यों कहता है ?

रामदत्त : यह पुलिस का पेटेण्ट गवाह है। यह पुलिस की ओर से चौदह मुक्दमों म गवाही दे चुका है। इसका व्यवसाय चोरी करना व जूआ खेलना है। अभी भी इसके विरुद्ध चोरी के अभियोग मे एक मुक्दमा दण्डनायक प्रथम श्रेणी के न्यायालय मे चल रहा है।

न्यायाधीश : डॉ० एस० पी० वर्मा का कथन है कि पुलिस के पेश करने पर उन्होंने बाल किशोर की शव-परीक्षा की। उसकी मृत्यु लाठी की चोटो से हुई थी व सिर की हड्डी टूट चुकी थी। यही उसकी मृत्यु का कारण था। वे ऐसा क्या कहते हैं ?

रामदत्त : डाक्टर साहब झूठ कहते है। वे एस० पी० साहब के अभिन्न मित्र है और मैं कुछ नही जानता।

न्यायाधीश साक्षी फैज मोहम्मद का कथन है कि उसने नक्शा-मौका तैयार किया, इस पर तुम्हारे हस्ताक्षर हैं। क्या कहना है ?

रामदत्त : ठीक है। हस्ताक्षर मेरे हैं पर यह नक्शा थान मे तैयार किया गया था।

न्यायाधीश : साक्षी कृपाण शंकर का कथन है कि उन्होने इन कपडो का (जो बाल किशोर के बतलाये जात है व घटना के समय पहने हुए बतलाये जाते है) रासायनिक विधि से परीक्षण किया और पाया कि वे मानवीय रक्त से रंजित थे। इसके बार मे क्या कहना चाहते हो ?

रामदत्त : (आवेश मे) मुझे पता नही।

न्यायाधीश : तुम्हारी पत्नी विनोद प्रभा साक्ष्य सफ्या मात का

कथन है कि उसी रात्रि को जब तुम हड़बड़ाये हुए आये तो उसने तुम्हारी घबराहट का कारण पूछा तो तुमने उसे सम्पूर्ण विवरण बता दिया और कहा कि मैं बाल किशोर को उसकी करनी का फल चखा आया हूँ। इस साक्षी के न मानने का क्या कारण है ?

रामदत्त (आवेश में आकर) क्या अब भी मैं उत्तर देने योग्य रह गया हू। मेरी पत्नी, नहीं नहीं वह कुलटा मेरे विरुद्ध न्यायालय मे आकर एक झूठे मुकदमे म साक्षी दे और मुझे फासी के तख्त पर लटकवाने का षड्यन्त्र करने वालों का साथ दे, इससे बढकर लज्जा की बात मेरे लिए और हो ही क्या सकती है ? (उसकी आखों मे आसू आ जाते हैं।)

न्यायाधीश • रामदत्त, तुम्हे जो कुछ कहना है, साफ-साफ बिना किसी भय के कहो।

रामदत्त (आश्वस्त होकर) श्रीमान् इस प्रश्न का उत्तर कि उसने मेरे विरुद्ध गवाही क्यों दी—अत में दूगा।

न्यायाधीश गवाह श्री हरिसिंह थानेदार का कथन है कि उसने इस मुकद्दमे की जाच की व तुम्हारे विरुद्ध यथेष्ट प्रमाण होने के कारण तुम्हारा चालान अदालत में एस० पी० साहब की स्वीकृति से पेश किया। इसके बारे मे तुम क्या कहना चाहते हो ?

रामदत्त वे झूठ कहते हैं। एक निरपराध के विरुद्ध फांसी का फदा डालने का कुचक्र रचा गया है। जहा ईश्वर का भय नहीं वहा ये लोग मनुष्यों से तो

क्या डरेंगे।

न्यायाधीश : अन्तिम गवाह श्री मुक्तासिह एस० पी० का कथन है कि उन्होने जाच द्वारा तुम्हारे विरुद्ध यथेष्ट प्रमाण पाये और अपने हस्ताक्षरों से मुकद्दमा न्यायालय मे पेश करवाया। इस गवाह को न मानने की क्या वजह है ?

रामदत्त : जज साहब, क्या बताऊ ? आप मालिक हैं, न्याय-मूर्ति हैं। ऐसे कुकर्म करने वाले का तो नाम लेना भी मैं नहीं चाहता, किन्तु ससार की रीति ही ऐसी है। जहा चोर स्वय चोर-चोर चिल्लाता हुआ भाग रहा हो—वहा चोर का पकड़ा जाना कठिन होता है।

न्यायाधीश (बीच मे बोलते हुए) तुम कहना क्या चाहते हो ? स्पष्ट रूप से कहो। यह उपदेश देने की जगह नही है।

रामदत्त : श्रीमानजी, मैं समझता हू कि मेरा अन्तिम समय निकट आ गया है। यदि आप पूछ रहे हैं तो सुनिये—(रुक जाता है) · ···

न्यायाधीश . देखो रामदत्त, शीघ्रता करो। केवल-मात्र तुम्हारा ही मुकद्दमा इस न्यायालय में नही है।

रामदत्त : क्या बताऊ, जहा पैसे के पीछे ससार पडा हुआ है, किसी के घर डाका डालकर उसे ही डाकू घोषित किया जाय, ऐसी ही कुछ परिस्थिति मेरी है। मेरी दयनीय दशा पर आपको तरस आयेगा। मेरी पत्नी······नहीं-नहीं, अब उसी मुक्तासिह की, विद्यावती मेरे विरुद्ध आपके समक्ष पेश की

गई । पर इसमे दोषी मैं उस दुष्ट को ही समझता हू जिसने एक भारतीय रमणी के सतीत्व को लूटा । भय व लालच से उसे जाल मे फसाया गया । परन्तु······ परन्तु ··· मैं चाहता हू कि·········(धम्म से गिर पडता है व रोने लगता है ।)

न्यायाधीश : अब रो रहे हो, पहले क्यो नहीं सोचा ?

मोहिनीमोहन . श्रीमान्, इतनी शीघ्रता से निर्णय पर पहुँचना न्याय के साथ खिलवाड करना होगा । जब आप पूरी बात सुनेंगे तथा सफाई पेश की जावेगी तभी आप समझेंगे कि वास्तविकता क्या है । अभी तक तो इकतरफा बात कागजों मे आई है । आप देखेंगे कि किस निर्दयता से एक गरीब कर्मचारी को, जिसका कोई सहारा नही एक जघन्य अपराध का अभियुक्त बनाया गया । उसकी पत्नी का सतीत्व लूटा गया उसकी मानसिक शान्ति नष्ट की गई और इतने पर भी जब सतोष नही हुआ तो न्याय की दुहाई देकर उसे कलकित करके मृत्युदण्ड दिलाने की योजना बनाई गई ।

न्यायाधीश : यह आप किस आधार पर कह रहे हैं ? क्या आपके पास कोई पुष्ट प्रमाण है ?

मोहिनीमोहन . जी, है । मैं समझता हू कि मुकद्दमे के सम्पूर्ण हालात आपके सामने आने पर आप उन सभी साक्षियों को अभियुक्त बनाकर इसी कठघरे मे खडा करने के लिये बाध्य हो जावेंगे जिसमें अभी रामदत्त खड़ा है और रामदत्त को मान सहित

रिहा कर देंगे।

न्यायाधीश : आप यह क्या रहे हैं ?

मोहिनीमोहन : श्रीमान्, मैं यही निवेदन करना चाहता हूं व आशा करता हूं कि आप अभियुक्त की दयार्द्र स्थिति को समझेंगे व सहानुभूतिपूर्वक न्याय करने की कृपा करेंगे। मैं मानता हूं कि न्यायाधीश देवता होता है। उन्हें न्याय करना होता है, और ऐसा न्याय जो दया से परिपूर्ण हो।

राजकीय-वकील : यह सारी बातें आप किस आधार पर कहे जा रहे हैं ? इस प्रकार का क्या कोई भी प्रमाण आपने पेश किया है ?

मोहिनीमोहन : वह भी पेश किया जायेगा। अभी वह स्थिति आई ही कहां है ? अभी तो अभियुक्त का कथन चल रहा है।

न्यायाधीश : आप बीच में ही क्यों उलझ रहे हैं ? आपका कर्त्तव्य न्याय करवाने में सहयोग देना है। आप जानते ही हैं—"दि ओनली डिफरेन्स बिटवीन दि बैंच एण्ड दि बार इज दैट देअर इज बार बिटवीन दि टू।'

मोहिनीमोहन : यह तो ठीक है, पर श्रीमान्, 'जस्टिस टेम्पर्ड विद् मर्सी' वाले सिद्धान्त को भी हृदयगम किया जाना चाहिये।

राजकीय-वकील : आप मान्य न्यायाधीश महोदय को शिक्षा नहीं दे सकते।

मोहिनीमोहन . (जोर से) और आप भी मुझे कुछ नहीं कह

सकते । मुझे अधिकार है कि मैं अभियुक्त के हितो का सरक्षण करू ।

न्यायाधीश अच्छा तो अब आप शात रहिये । (रामदत्त को लक्ष्य करके) हा तो तुम्हारी पत्नी तुम्हार विरुद्ध क्यो कहती है ?

रामदत्त (आसू पोछते हुए) जज साहब ! क्या कहू ? कहते हुए लज्जा आती है । मैं अनुभव करता हू कि मुझे इस प्रश्न का उत्तर देने के पूव ही मर जाना चाहिये था ।

न्यायाधीश पर उत्तर तो देना होगा ।

रामदत्त श्रीमन् एक पत्नी अपने पति के विरुद्ध साक्ष्य दे इससे अधिक और क्या दण्ड हो सकता है । (आवेश मे आकर) —उस दुश्चरित्रा पापिनी का मैं नाम लेना तो दूर रहा सुनना भी नहीं चाहता । आज सीता व सावित्री के देश म यह अनतिकता । कि तु इसम उसका दोष नही दोष है सम्पत्ति का सत्ता का व फशन का । (रुककर) फिर एक अवस्था होती है जिसमे स्त्री हो या परुष प्राय भटक ही जाते है या उन्हे पथ भ्रष्ट होने के लिये विवश कर दिया जाता है । आज (कण्ठ रुद्ध हो जाता है ।)

न्यायाधीश तुम्हें कई बार कह दिया है कि अपने बयान को धर्मोपदेश का माध्यम मत बनाओ । स्पष्टीकरण करते हुए शीघ्रता करो।

रामदत्त मान्यवर मैं यही तो बतला रहा था कि श्री मुक्तासिह ने अपने रूप-यौवन धन तथा प्रभुता के

मद मे न जाने कितने कुकर्म किये हैं व कर रहा है। उसकी इस शिकारी प्रवृत्ति का शिकार यदि मैं बन जाता तो आज यह स्थिति सामने नही आती परन्तु ·· ···।

न्यायाधीश . क्या ?

रामदत्त · जी, सच कहता हू। मैंने अपने गौरव को किसी भी मूल्य पर बेचने से इन्कार कर दिया। आप समझ गए होंगे कि उसने मेरी पत्नी को पथ-भ्रष्ट किया और मुझे—राह के काटे को—नष्ट करना ही श्रेयस्कर समझा। मेरे विरुद्ध कई शिकायते करवाई, मेरे अफसरो को मेरे विरुद्ध कार्यवाही करने को उकसाया, परन्तु दुर्भाग्य से अभी तक जीवित हू।

न्यायाधीश इसका कुछ आधार है ?

रामदत्त जी, पेश करूगा। सबूत भी पेश करूगा। उसने उस दुष्टा को अलग मकान दिलवाया, मुझ से अलग किया और यह प्रचार करवाया कि मैं उसे मारता पीटता हू किन्तु श्रीमान्! आप देख रहे हैं मेरे पौरुष को—मेरी इस ·· ·(बेहोश सा होकर गिर पडता है।)

न्यायाधीश रामदत्त ··· ·

[इस पर पुलिसवाले उसे उठाते हैं व पानी छिडकते हैं। कुछ होश मे आने पर एक गिलास पानी पिलाते हैं।]

मोहिनीमोहन · सर, यदि अभियुक्त आज बयान देन मे असमर्थ है तो कल की तारीख रख दें।

रामदत्त (उठकर) नहीं, कोई आवश्यकता नहीं आगे

मेरी समस्त सपत्ति पर ग्राधिपत्य करना चाहा। एक ही तीर से दो शिकार करने चाहे। मेरा व रामदत्त का जीवन नष्ट कर दिया उस दुष्ट ने। पर भगवान के घर देर है—ग्रन्धेर नहीं। उस दुष्ट ने·········

[न्यायाधीश भौचक्के से बैठे रहते हैं। सभी उपस्थित जन-समुदाय चित्रलिखित-सा देखता रहता है।]

[पटाक्षेप]

• •

सोना और संकट

• •

पात्र

सेठ	स्थानीय सेठों में सबसे अधिक संपत्तिशाली
मुनीम	सेठ का मुनीम
जगन्नाथ	सेठ का समर्थक
कपिलदेव	विचारशील व्यक्ति
वर्षा	सेठ की पुत्र-वधू, सुरेश की पत्नी
चतुर्भुज व रामभुज	सामाजिक कार्यकर्त्ता
माधो	सेठ का नौकर

[स्थान : पुराने ढग की बनी हुई पत्थर की भव्य हवेली। मुख्य-द्वार तक पहुँचने मे पाच सीढिया पार करनी पडती हैं। मुख्य-द्वार के दाहिनी ओर दीवानखाना है। आधुनिक ढग की साज-सज्जा से सुसज्जित होने पर भी उसकी बिछावट देशी ढग की है। मेज-कुर्सी के स्थान पर पूरे कमरे मे एक गद्दा बिछा हुआ है। दीवार के सहारे गोल तकिये रखे हुए हैं। बाईं ओर मुनीम के बैठने का स्थान है। पास ही तिजोरी रखी हुई है, उसके पास वहियो का ढेर लगा हुआ है। दीवानखाने का एक दरवाजा घर मे खुलता है। आज दीवानखाने मे चहल-पहल है क्योकि सेठजी बम्बई से आए हैं। उनकी बडी-बडी मिलें कई नगरो मे चल रही हैं। स्थानीय सेठो मे वे सर्वाधिक सम्पत्तिशाली हैं। धर्म के नाम पर एक ट्रस्ट बना रखा है जिसका उद्देश्य अपनी 'वाह-वाही' करने वालो को 'पत्र-पुष्प' से सन्तुष्ट करना है। करीब दस बजे दो व्यक्तियों (जगन्नाथ व कपिलदेव) के साथ वे दीवानखाने मे प्रवेश करते हैं और आकर यथास्थान बैठ जाते हैं। उनका नौकर भी घर मे से आकर उनकी सेवा मे उपस्थित हो जाता है।]

सेठ : (बैठकर) माधो, जा कुछ खाने-पीने को ला।

मुनीम : अभी तो चाय से ही काम चल जाएगा ?

सेठ : कोरी चाय से काम नही चलेगा। चाय मे होता ही क्या है गर्म पानी और चीनी। दूध तो उसमे नाम मात्र को होता है।

जगन्नाथ : *फिर आज के फैशन के हिसाब से तो एक प्याले मे सोलह बूंद से अधिक दूध नही होना चाहिए।*

सेठ : (हसकर) देखिये मुनीम जी, बन्धु-जनो से कई वर्षों के बाद मिलना हुआ है इसलिए केवल गर्म पानी से आतडिया जलाकर ही उन्हे नही टरकाना चाहिए।

जगन्नाथ : *सुना मुनीम जी सेठ साहब का कथन। इसे कहते हैं हृदय की विशालता।*

[इस पर मुनीम माधो को रुपये दकर बाजार से मिठाई आदि लाने के लिए समझाकर भेज देता है।]

सेठ : क्यों मुनीम जी खाता-रोकड आदि तैयार हो गए ?

मुनीम : कुछ बाकी हैं।

सेठ : तो काम कैसे पार पडेगा ?

मुनीम : जल्दी करेंगे।

सेठ : हा, इन्कम-टैक्स आफिस मे सारे आकडे पेश करने हैं। अब साल समाप्त होने में दिन ही कितने रह गए हैं !

जगन्नाथ : *वैसे मुनीम जी हैं तो चतुर। चौबीस दिनों में तो ये आपकी* सम्पूर्ण मिलो का हिसाब तैयार कर सकते है।

मुनीम . (मुस्कराकर) इसमे क्या बडी बात है। सात दिनो मे तो शुकदेवजी ने भागवत सुनाकर परीक्षित को स्वर्ग मे भेज दिया था, फिर अपने हाथ मे तो अभी चौबीस दिन हैं।

[*सभी हसते हैं।* इसी समय माधो नमकीन, मिठाई व चाय की ट्रे आदि ला-लाकर रख देता है। फिर पानी की गिलासें लाने के लिए घर मे चला जाता है।]

सेठ : (मिठाई आदि की ओर देखकर) हाँ तो फिर क्या देर-दार है ? यज्ञ आरम्भ करें, होम की सारी सामग्री तैयार है।

मुनीम : आप ही प्रारम्भ कीजिये।

सेठ : नहीं। यज्ञ का आरम्भ तो ब्राह्मण से ही ठीक रहता है। (कपिलदेव से) करिये पण्डित जी उद्घाटन, ब्राह्मण का मुख तो अग्नि-तुल्य होता है।

कपिलदेव : सेठजी, आप भूल कर रहे हैं। आज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र की भेद-कल्पना मिट्टी में मिल रही है। यह हमारी दुकानदारी वर्षों तक ही नहीं सहस्राब्दियों तक चलती रही है।

मुनीम : (व्यंग्य से) और आज आप वास्तविकता को पहचान चुके हैं।

कपिलदेव : और नहीं तो क्या ? हम सभी भारतीय हैं एक ही मिट्टी से बने हुए, एक ही धरती पर खेले हुए तथा एक से ही पोषित हैं।

सेठ : (आश्चर्य से) वाह पण्डितजी ! आप तो पूरे राष्ट्रवादी बन गए हैं।

मुनीम : और जैसे दूसरों को तो दकियानूसी ही समझ रहे हैं।

सेठ : इन्हें क्या पता कि मेरे क्या विचार हैं ? मेरी मजाक को ये गंभीर समझ बैठे। (कपिलदेव से) आप जानते हैं कि मैं जब भी किसी मन्त्री महोदय से अथवा उच्च अधिकारी से मिलने जाता हूं तो शुद्ध खद्दर के कपड़े पहन कर जाता हूँ।

कपिलदेव : और नहीं तो········

जगन्नाथ : (बीच में बोल उठता है) आप सेठजी इन बातों में क्यों उलझ रहे हैं ? पहले कुछ खा पीकर बहस करना ठीक रहता है क्योंकि भूखा व्यक्ति क्या पाप नहीं करता ?

कपिलदेव (जगन्नाथ को झिडकते हुए) तुम क्या सबको अपने समा ही समझ रहे हो ?

सेठ कपिलदेव जी ! आज आपको यह क्या हो गया है ? कुछ ही वर्षों मे ऐसा परिवर्तन । आप तो क्रांतिकारी ब गये हैं।

कपिलदेव (भावावेश मे) क्रान्तिकारी ? (कुछ रुककर) हा, क्रान्तिकारी बन गया हू । आज भारत के प्रत्येक नागरिक क क्रातिकारी बनना है कि तु वह क्राति राष्ट्रीय भावनाओ ओतप्रोत होगी तथा रक्तहीन होगी ।

जगन्नाथ तो वह क्रान्ति ही क्या ?

कपिलदेव भूल रहे हैं आप क्रान्ति का आधुनिक अर्थ । रक्तिम हसायुक्त क्राति का युग बीत चुका है । यह क्राति विचार की क्राति होगी । साथ ही साथ हमे नैतिकता का पाठ पढन होगा राष्ट्र को सर्वोपरि मानना होगा ।

सेठ इसम क्या नई बात है ? राष्ट्र से बढकर और होता ही क्या है ?

जगन्नाथ सेठ साहब को आप क्या उपदेश दे रहे हैं । आपने तो जन हित को ध्यान मे रखकर पहले से ही कॉलेज चिकित्सालय खाल रखे हैं ।

कपिलदेव हा तुम ठीक कहते हो । कालेज खोला चुनाव जीतने के लिये चिकित्सालय खोला कर (टैक्स) बचाने के लिय ।

सेठ (सकपका कर, दिखावटी हमी हसकर) तो जाने दीजिये ऐसा रूखा वाद विवाद । नीति कहती है कि मित्रो से वाद विवाद नही करना चाहिए ।

जगन्नाथ ठीक फरमा रहे हैं सेठ साहब ।

सेठ (बात बदल कर) अरे ! चाय ठडी हो रही है। आज सुबह किसका मु ह देखा था कि सामने रखी हुई मिठाई भी

तरस रही है।

जगन्नाथ : तो अब शीघ्रता करें।

[इतने में घबड़ाये हुए-से माधो का प्रवेश]

माधो : (प्रवेश करके) बाबू साहब, बहूजी दीवानखाने में आकर आपसे कुछ कहना चाहती हैं।

सेठ : (क्रोध से) क्या कहा ?

माधो : (घिघियाते हुए) मैंने तो……मैंने तो नाही कर दी पर

सेठ : (भाव बदल कर) देखा कपिलदेवजी ! यह आज का युग है, स्त्री-शिक्षा का प्रभाव है।

जगन्नाथ : (हाँ में हाँ मिलाते हुए) घोर कलियुग आ गया है।

सेठ : राम, राम ! बहू श्वसुर से बात करे। पहले की बहुएं घर के ही नहीं मोहल्ले तक के बड़े-बूढ़ों का पर्दा करती थी।

जगन्नाथ : आपने तो सुरेश को पढ़ी-लिखी लड़की से विवाह करने के लिये नाही की, उसे समझाया पर माना नहीं।

सेठ : और विवाह भी तो ढंग से नहीं किया गया।

कपिलदेव : (गम्भीरता से) सेठजी, आप भूल कर रहे हैं। आज स्त्री को कैदी की तरह चहारदीवारी में बन्द करके नहीं रखा जा सकता। श्वसुर से निवेदन करने में इतनी हायतोबा मचाने की कोई आवश्यकता दिखाई नहीं देती।

सेठ : (आश्चर्य से) क्या कहा ?

कपिलदेव : सोचकर कहा है कि श्वसुर बहू के लिये पिता के समान होता है।

जगन्नाथ : पर आज तो स्त्रियां घर में रहना ही नहीं चाहतीं। वे भी राजनीति में भाग लेना चाहती हैं।

कपिलदेव : यह तो प्रगति का लक्षण है। आज उन्हें सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक निर्माण में सहयोग देना है, जिसके लिये शिक्षा के प्रसार की आवश्यकता है।

गृहस्थी को स्वर्ग तुल्य बना सकती हैं।

सेठ आप तो कोरा आदर्श छांटते हैं।

कपिलदेव और आप वास्तविकता से कोसो दूर हैं।

सेठ नही। मैंने तो इसी माह पत्रिका मे एक पढ़ी लिखी लडकी के ज्ञान का नमूना पढा है।

जगन्नाथ फिर इन्हें भी सुनाइये।

सेठ बात यह है कि पति के कथनानुसार पत्नी आलू की सब्जी बनाने लगी पर पति के दफ्तर से आने तक पुस्तक को टटो लती रही। पति के पूछने पर कहा कि ये बडे-बडे आँथर दूसरो की कठिनाइयों को क्या समझें ? बस लिख दिया आलू को पहले धोओ पर यह नही लिखा कि किससे धोवें—पानी से, दूध से, पेट्रोल से या केरोसीन से ?

[इस पर सभी ठहाका मार कर हसते हैं। इतने मे वर्षा प्रवेश करती है। उसकी बगल मे कुछ दबा हुआ दिखाई देता है।]

वर्षा (प्रवेश करके, नतमस्तक खडी होकर) पिताजी, यद्यपि मुझे आपके सामने आने का दुसाहस नहीं करना चाहिये था परन्तु अभी अभी रेडियो से समाचार सुनकर कर्त्तव्य ने मुझे झकझोर दिया है कि मैं युग की आवाज को सुनू, व पहिचानू।

सेठ (क्रोध से) तुम कहना क्या चाहती हो ? व्यर्थ की बकवास मत करो। क्या सुना रेडियो म ?

वर्षा यही सुना कि हमारे पडौसी देश ने हमारी सीमा पर आक्रमण कर दिया है, देश पर विपत्ति के बादल मडरा रहे हैं। फिर आप जानते ही हैं कि हम सीमा प्रान्त पर हैं।

सेठ : (बीच मे बोल उठता है) यह तो सेना का काम है। तुम्हें हमे चिन्ता की क्या आवश्यकता है ?

वर्षा : (आवेश मे) सेना को और सरकार को ? क्या देश केवल उन्ही का है ? नही, आप नही जानते कि प्रत्येक देशवासी का कर्त्तव्य हो गया है कि इस महान् यज्ञ मे अपने आपकी आहुति दे दे। हम सभी को इसमे सहयोग देना है।

सेठ : क्या सहयोग ? कैसा सहयोग ?

वर्षा यही कि हमारे जवान सीमा पर शत्रुओ से लडेंगे और हमे लडना होगा सीमा मे फैल रहे अनैतिक व राष्ट्र-द्रोही तत्वों से। हमे आर्थिक परिस्थितियो को सतुलित रखना होगा।

सेठ : (क्रुद्ध होकर) तो तुम चाहती क्या हो ? यह लेक्चर क्यों झाड रही हो ?

वर्षा मैं तो निवेदन करना चाहती हू कि हम सभी इस पावन-यज्ञ मे हव्य दें। शस्त्रास्त्रों को मागने के लिये व अन्य हित-कारी कार्यों के लिये सोना दे ।

सेठ : (जोर से) सोना !……कहा है सोना ? क्या पागल हो गई हो ?

वर्षा : क्या ? सोना नहीं है ? सोने की सैकडो सिल्लिया जो तहखाने के नीचे गडवा रखी हैं—वे किस काम आवेंगी ? उस गडे हुए सोने व मिट्टी मे क्या अन्तर है ?

सेठ : (आवेग मे) यह पागल हो गई है……हडका गई है…… इसे……

वर्षा : यह तो युग बतलावेगा कि वस्तुस्थिति क्या है ? सोने का महत्त्व देश से बढ़कर नहीं होता।

सेठ : पर सोने से ही तो पूछ होती है। विष्णु को भी लक्ष्मी के सामने अपमानित होना पड़ा था।

वर्षा : किन्तु रावण को सोने के उन्माद (सोने की लका के उन्माद) के कारण ही निर्मूल होना पड़ा था। विभी-

यण ने सोने की लंका का त्याग किया तो महान् बना। परीक्षित को सोने के मद के कारण ही मरना पड़ा।

सेठ (आवेश में आकर) तुम चली जाओ यहां से। मैं कहता हूं चली जाओ, यह तुम्हारा उपदेश.........

वर्षा (बीच में बोलती हुई) तो आप सोना नहीं देंगे? पर यह भी याद रखें कि सोने को सुरक्षित रखने के पहले सीमा को सुरक्षित रखना अनिवार्य है।

सेठ (माधो से) निकालो इसे—अभी बाहर करो—घर में ले जाओ—यह पागल हो गई है।

वर्षा (तमतमा कर) ठीक है, तो मैं यह चली। (बगल में से गठरी निकाल कर दिखलाती हुई) जाती हूं—रक्षा-कोष में अपने आभूषण—अपने स्त्री-धन को जमा कराने के लिये।

सेठ (उठते हुए) पकड़ो इसे—पकड़ो—यह पागल है—चोर है।

[देखते-देखते वह शीघ्रता से प्रस्थान कर जाती है। सब किंकर्त्तव्यविमूढ़ से होकर एक दूसरे की ओर ताकने लगते है। कुछ ही क्षणों में एक विशाल जन-समुदाय उमड़ा हुआ-सा हवेली के पास से गुजरने लगता है। उसमें से दो प्रतिनिधि हवेली में प्रवेश करते हैं शेष जन-समूह रुककर 'जय जवान, जय किसान', 'भारत-माता की जय', 'हमारे वीर प्रधान मन्त्री की जय', 'प्रधान मंत्री जिन्दाबाद' के गगनभेदी नारों से आकाश को गुञ्जित कर देता है।]

सेठ · (बाहर झांककर देखता है, इतने में दो नेता चतुर्भुज व रामभुज को प्रवेश करते देखकर) आइये, कैसे कष्ट किया? ......बैठिये, क्या आज्ञा है? आपके लिये चाय मंगाई जाय या कॉफी?

तुर्भुज : नही, अभी चाय-वाय पीने का समय नही। (कुछ गभीर होकर) सेठजी, आप जानते ही हैं कि आज हमारे ऊपर घोर सकट छाया हुआ है। देश के नेताओ ने सोना देने के लिये जनता का आह्वान किया है।

ामभुज : सेठ साहब, देश को बाह्य आक्रमणो से सुरक्षित रखने तथा अपने आत्म-सम्मान की रक्षा करने एव आत्मनिर्भर बनने के लिए विकास कार्यों और सुरक्षा-प्रयत्नो को एक साथ जारी रखना आवश्यक है। इसके लिये हमे विदेशी-मुद्रा की अत्य-धिक आवश्यकता है।

सेठ : तो यह तो हमारे प्रतिनिधियों के विचारने की बात है। हमसे जैसा बने सहयोग ले लीजिये।

चतुर्भुज : इसी आशा व विश्वास से तो आये ही हैं। आप सबसे अधिक सपत्तिशाली व उदार हैं। आज देश को सोने की जरूरत है।

सेठ : हा, मैं भी मानता हूं। (कुछ रुक कर) इसीलिए मैंने मेरे बेटे की बहू वर्षा के साथ कुछ आभूषण रक्षा-कोष मे भेजे हैं।

चतुर्भुज : सो तो ठीक है। किन्तु इतने से काम थोडे ही चलेगा। यदि आप रक्षा-कोष में अधिक सोना नही दे सकते तो स्वर्ण-बाड ही खरीद लीजिये।

सेठ : स्वर्ण-बाड ! कैसे स्वर्ण-बाड ?

चतुर्भुज : सुनिये हमारे प्रधान मत्री जी ने जन-हित व राष्ट्र-हित दोनो को ध्यान मे रख कर स्वर्ण-बाड-योजना की घोषणा की है।

सेठ : योजनाए व घोषणाए तो होती ही रहती हैं।

चतुर्भुज : आप ऐसा क्यों सोचते हैं ? यह योजना ऐसी-वैसी नही है

सेठ : किन्तु आप बतलाइये कि साढ़े-बासठ रुपए प्रति तोले के

भाव से सोना कौन देना चाहेगा ?

चतुर्भुज : आप भूल कर रहे हैं। आप इस सकट के समय को रुपयों से आक रहे हैं ?

रामभुज फिर हाल ही मे जो योजना घोषित हुई है उसमे तो आप *वाण्ड खरीद सकते हैं । बाण्ड खरीदने वालो को* अनेकानेक सुविधाये भी प्रदान की गई हैं।

सेठ : इस बहाने सरकार पू जीपतियो को फसाना चाहती है।

चतुर्भुज · सेठ साहब, आप कैसी बाते कर रहे हैं। देखिए लोगो मे जो गलतफहमी फैली हुई है उसे ही तो दूर करना है। सर-*कार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि बाड खरीदने के लिए* दिया गया स्वर्ण चाहे घोषित हो या अघोषित उसकी जाच पड़ताल नही की जावेगी।

रामभुज . और भी सुनिए—इस सोने पर सपत्ति-कर नही लगेगा। पचास किलोग्राम तक के सोने के (स्वर्ण) बाडो पर मृत्यु-*कर भी नही लगेगा। इसलिए यह अच्छा इन्वेस्टमेण्ट है।*

सेठ · यह तो सुन लिया, परन्तु यह इन्वेस्टमेण्ट नही है।

चतुर्भुज . क्यो नही है ? प्रति दस ग्राम सोने पर दो रुपए प्रतिशत वार्षिक सूद दिया जावेगा। इसके अतिरिक्त तीन रुपए प्रति दस ग्राम सोने के गहनो पर उसकी घडाई के दिए जावेंगे।

रामभुज · इस प्रकार प्रति दस ग्राम पर कुल पाच रुपए प्रतिशत वार्षिक पड जाता है। इसमे ब्याज की रकम कर-मुक्त होगी।

कपिलदेव और सबसे बडा इन्वेस्टमेण्ट तो राष्ट्रीय हित मे है ही।

सेठ : तब तो यह योजना ठीक है। (बनावटी हसी हसकर) *पर हमारे पास इतना सोना कहा ?*

चतुर्भुज : (आश्चर्य से) आपके मुंह यह बात शोभा नही देती।

(कुछ सोचकर) एक लाभ और भी है कि पन्द्रह वर्षों के बाद जो शुद्ध सोना वापस लौटाया जायगा उसके गहने आदि बनवाते समय चौदह कैरट की पाबन्दी नही होगी।

रामभुज : (कुछ हँसकर) और सबसे बडा लाभ यह भी होगा कि आप चोर व डाकुओं के भय से मुक्त हो जावेंगे। आपको बैंक के लॉकरों का किराया भी नही देना पडेगा। इसलिये शीघ्रता कीजिए। (थैले मे से लिस्ट निकालते हुए) तो आपके नाम से कितने लाख दर्ज करवाने हैं ?

सेठ : (कुछ चिन्तित-सा होकर) देखिए अभी तो मैं कुछ नही कर सकता। क्षमा कीजिए.........(कुछ रुक कर) और पन्द्रह सालों में क्या होगा—कौन जाने ?

चतुर्भुज : (गभीरता से) देखिये सेठ साहब, आज टालने का समय नही है। इस सकट का सामना हम सबको मिलकर करना है। मातृभूमि की रक्षा के लिए हमे सोना तो क्या तन-मन-धन सहर्ष बलिदान करने में भी नही हिचकिचाना चाहिए।

रामभुज : (गभीर होकर) सेठ साहब ! सोने और सकट मे आप किसको चुनते हैं ? सोना दबाकर रखेंगे तो सकट झेलना पडेगा, सकट मिटाना चाहते हैं तो सोना देना होगा। आँखें बन्द हो जाने पर यह सब कुछ यहीं रक्खा रह जावेगा। शीघ्रता कीजिये हमें और भी ......

[इतने मे सायरन सुनाई देता है। सभी चौंक जाते हैं। जन-समुदाय खाइयो की ओर भागता है।]

सेठ : (भौचक्का-सा होकर) हैं..... हैं.........यह क्या ?

चतुर्भुज : (आत्मविश्वास से) घबराइए नही सेठ साहब, हम सकट का सामना करने को तैयार हैं। आज्ञा दीजिए।

सेठ : (अपनी करधनी से चाबियाँ खोलकर चतुर्भुज के हाथ

मे देते हुए।) लीजिए नेताजी ये चाबियाँ.................. जितना सोना चाहें लीजिए................... मिट्टी और सोना समान है......... ...सोना... . देश का मूल्य सोने से करोड़ गुना अधिक है। लीजिए......देश के लिए..... राष्ट्र-रक्षा के लिए....... संकट का सामना करने के लिए रक्षा-कोष के लिए.......। लीजिए..........

[सभी प्रसन्न होते हैं।]

[पटाक्षेप]

• •

अजी सुना आपने

• •

पात्र

माथुर	राजकीय कॉलिज का अस्थायी प्राध्यापक
चिन्तामणि, कुन्तल, पुरी, शर्मा, अग्निहोत्री, खण्डेलवाल, और रामप्रसाद	उसी कॉलेज के स्थायी प्राध्यापक
पोस्टमेन	

[स्थान : राजकीय कॉलिज के प्रोफेसर श्री चिन्तामणि का मकान जो शहर से कुछ दूर, आधुनिक ढंग से बना हुआ है। उसके चारों ओर फुलवारी लगी हुई है। गर्मी के कारण पत्तियां झुलसने लगी हैं। कुछ झड़ने भी लगी हैं पर उचित देख रेख के कारण फुलवारी के सौन्दर्य में कमी नहीं आई है। मकान को बंगला या कोठी विशेषण से सबोधित किया जाता है। दरवाजे में प्रवेश करते ही सामने ड्राइंग-रूम बना हुआ है जो आधुनिक साज-सज्जा से सज्जित है। उसके फर्श पर कार्पेट बिछी हुई है, बीच में मेजपोश से ढकी हुई एक मेज रक्खी हुई है जिसके आमने-सामने कुर्सियां रक्खी हुई हैं। मेज के दाहिनी ओर एक आलमारी में पुस्तकें करीने से रखी हुई हैं। श्री चिन्तामणि लिखने में व्यस्त दिखाई देते हैं। इसी समय उनके सहयोगी श्री कुन्तल व श्री माथुर प्रवेश करते हैं।]

कुन्तल : (प्रवेश करके) नमस्ते जी, क्या हो रहा है ?

चिन्तामणि : नमस्ते, आइये विराजिये।

माथुर : (हंसकर) और हमारा भी ध्यान रखिये।

चिन्तामणि : (मुस्करा कर) भई अपना-अपना ध्यान स्वयं को रखना है।

पात्र

माथुर	राजकीय कॉलिज का अस्थायी प्राध्यापक
चिन्तामणि, कुन्तल, पुरी, शर्मा, अग्निहोत्री, खण्डेलवाल, और रामप्रसाद	उसी कॉलेज के स्थायी प्राध्यापक
पोस्टमेन	

मायुर यह तो ठीक है पर छुट्टी के दिन क्या लिखा-पढी हो रही है ?

कुंतल क्लास-नोटस तैयार कर रहे होंगे। आज की शिक्षा प्रणाली ही ऐसी है। हम तो ट्यूब वल से सिंचाई करनी है।

मायुर कैसे ?

कुन्तल जिस प्रकार पाइप क द्वारा कुए से पानी निकाल कर नाली के द्वारा बाग की सिंचाई की जाती है उसी प्रकार हम भी पुस्तकों के ज्ञान को अपन मस्तिष्क मे सकलित करके छात्रों तक पहुँचा देते हैं —बाग की सिंचाई कर दते हैं।

चिन्तामणि और इससे बढकर यह कहा जा सकता है कि जिस प्रकार कुए का पानी टकी म एकत्र किया जाकर पाइप क द्वारा घडो म भरा जाता है फिर घडो से बाल्टी म भर कर स्नानादि के बाद नाली क द्वारा कहीं चला जाता है वैसे ही आज हम लोग पुस्तको रूपी कुए से अपन टकी रूपी मस्तिष्क में टापिक्स को सग्रहीत करके कक्षा म जाते हैं और फिर छात्र रूपी घडों मे उस ज्ञान रूपी पानी को भरने का प्रयत्न करते हैं।

माथुर (हस कर) *या यो कहिए कि ज्ञान रूपी पानी को छात्र रूपी घडो म भर दिया जाता है।*

कुंतल देखिये माथुर साहब आप बीच म मत बोलिये सारा मजा किरकिरा हो जाता है। पूरी बात सुनने दीजिए।

चिंतामणि हा तो फिर वह ज्ञान रूपी पानी परीक्षा के समय उत्तर पुस्तिका रूपी बाल्टी म पहुँच जाता है और फिर उस सिंचाई के योग्य या अयोग्य घोषित करन के लिय परीक्षक रूपी माली उसका परीक्षण करता है और इसकी रिपोट वह आवश्यक कार्यवाही हेतु विश्वविद्यालय रूपी अनुसधानशाला मे भेज देता है।

मायुर : वाह चिन्तामणि जी, आप तो चिन्तन करने मे दक्ष हैं।

कुन्तल : और नाम भी तो चिन्तामणि है।

[सब हसते हैं।]

माथुर : क्षमा कीजिएगा, हमने आपके कार्य मे बाधा पहुँचाई होगी। क्या लिख रहे थे ?

चिन्तामणि : कोई विशेष बात नही थी, एक छोटा-सा निबन्ध लिख रहा था।

कुन्तल : किस कक्षा के लिए ?

चिन्तामणि : नहीं, कक्षा के लिए नहीं, पत्रिका मे भेजने के लिये।

माथुर : किसी विशेषाक मे भेजना है ?

चिन्तामणि : हा, विद्यार्थी विशेषाक के लिए भेजना है। सम्पादक ने शीघ्र ही कोई छोटा-सा निबन्ध भेजने के लिए आग्रहपूर्वक लिखा है।

कुन्तल : किस विषय पर लिख रहे हैं ?

चिन्तामणि : विषय तो वही घिसा-पिटा है—छात्र और अनुशासन। आप जानते ही हैं कि आज के छात्रों पर अनुशासनहीनता का लाछन लगाया जाता है।

मायुर : क्या बताऊं आज तो हवा ही ऐसी बह रही है।

चिन्तामणि : और इसके लिए हम भी उत्तरदायी हैं—उनके अभिभावक भी हैं।

कुन्तल : (आश्चर्य से) भला इसमे हमारा क्या उत्तरदायित्व ? हमारा काम तो उन्हे पढाना है, पाठ्य-क्रम के अनुसार और परीक्षा की दृष्टि से समझाना है।

मायुर : कुन्तल साहब का कथन सत्य है और देखिये हमे मिलता ही क्या है ? इतने पैसों में तो ऐसा ही काम होगा।

चिन्तामणि : यही तो हमारी भूल है। हम प्रत्येक बात को पैसों से आकते हैं। माफ कीजिये हम शिक्षा का अर्थ ही नही समझते।

[सभी आगन्तुक तार को पढ़कर उदास हो जाते हैं।]

शर्मा : (आश्वासन देते हुए) क्या माथुर साहब आप भी बच्चों की तरह रो रहे हैं, हम आपके लिये प्रयत्न करेंगे।

अग्निहोत्री : (शर्मा से) यदि आप चाहें तो अपने चाचा से कह कर कुछ सहायता कर सकते हैं।

शर्मा : वे अभी शिक्षा-विभाग मे तो नही हैं किन्तु विधि-विभाग मे हैं। खैर कुछ न कुछ तो हो ही जायेगा चिन्ता की आवश्यकता नही।

खण्डेलवाल : (घड़ी देखकर) तो अब हम चलते हैं। (सभी से) चलो भाई तीन बजने वाले हैं। शो शुरू होने वाला है। रामदहिनजी भी इन्तजार कर रहे होंगे।

पुरी : (माथुर से) आप प्रिंसिपल साहब से कनफर्म कर लीजिये। उनके पास भी सूचना आई होगी या इस तार की नकल आई होगी।

चिन्तामणि : भई मैं भी नही चलूंगा। कल ही मैंने नाहीं कर दी थी। आपने जो कष्ट किया उसके लिये धन्यवाद।

[चिन्तामणि व माथुर को छोड कर सभी चले जाते हैं।]

माथुर : (चलने का उपक्रम करते हुए) मैं जाकर प्रिंसिपल साहब से मिल आता हू।

चिन्तामणि : हा आज तो साहब घर पर ही होंगे, रविवार है।

माथुर : सिनेमा तो नही गये होंगे ?

चिन्तामणि : नही, परीक्षा-कार्य मे व्यस्त हैं। इन दिनो मे कही उन्हे फुर्सत मिलती है ? (कुछ सोच कर) यह तार कल का दिया हुआ होगा ?

माथुर : कल का हो या आज सुबह दिया गया होगा। (चलने लगता है।)

[श्री रामप्रसाद प्रोफेसर प्रवेश करते हैं। श्री माथुर मुख्य

द्वार तक पहुच जाते है ।]

रामप्रसाद कहिये माथुर साहब, इस गर्मी मे वापस कहा जा रहे हैं ?

माथुर · एक आवश्यक कार्य से प्रिंसिपल साहब से मिलकर आता हू ।

रामप्रसाद क्या कोई विशेष कार्य है ? (उसके चेहरे की ओर देख कर) अरे इतने अस्त-व्यस्त क्यो दिखाई दे रहे हो ?

माथुर (तार देते हुए) देखिये ।

रामप्रसाद · (तार को पढ कर हसते हुए) यह तो ठीक है ।

माथुर (चिढ़ कर) ठीक है ? क्या आप मुझे चिढाने के लिये आये हैं, मेरे घावो पर नमक छिडकने के लिये आये हैं ?

रामप्रसाद : और यह मरहम का काम दे तब ?

माथुर व्यर्थ की बकवास अभी मत कीजिये । आप अन्दर जाकर चिन्तामणि के पास ठहरिए । मैं साहब से मिलकर अभी आता हू ।

रामप्रसाद · पर आप जा क्यों रहे हैं ?

माथुर . (क्रुद्ध होकर) मजाक रहने दीजिये ।

रामप्रसाद मजाक ? तो क्या अपनी मूर्खता का प्रकाशन करने के लिये जा रहे हैं ?

माथुर · (अनसुनी करके चलते हुए) घायल की गत घायल जाने··· (जाने लगता है)

रामप्रसाद : (हाथ पकड कर) अजी सुना आपने—तार मे क्या लिखा है ?

माथुर . (रोष से) हां, सुन लिया, पढ लिया व समझ लिया, मैं बेवकूफ नही हू ।

हुए थे इतने मे उनकी छोटी मुन्नी तीन चार बार रोती हुई उनके पास आई और कहने लगी कि बाबूजी मैं भी हलुआ खाऊगी, मैं भी हलुआ खाऊगी।

राजेन्द्र प्रसाद (बीच मे बोलते हुए) बच्चे तो आते ही रहते हैं। इसमें बतलाने की क्या बात है।

महेन्द्र आप सुनिये तो सही। आप तो बात का क्रम बिगाड देते हैं।

राजेन्द्र प्रसाद अच्छा तो सुनाइये।

महेन्द्र बात यह थी कि मुन्नी के अधिक तग करने पर लालाजी अन्दर गये और कहा कि मुन्नी को क्यो रुलाते हो ? हलुआ दो न इसे। इस पर उत्तर मिला कि हलुआ तो नही है।

राजेन्द्र प्रसाद तो इसमे आश्चर्य की क्या बात है, कम बनाया होगा ?

महेन्द्र कम क्या बीस व्यक्तियों का खाना बना था, और पाच महारथी खा रहे थे।

वीरचन्द्र किन्तु अभी आगे तो सुनिये। (महेन्द्र से) *सुनाओ यार*, गुरुजी की करामात।

महेन्द्र . हा, तो हलुए के खत्म होने की बात सुनकर लालाजी ने मुन्नी से कहा कि बेटी अभी क्यो रोती है, इनको जाने दे, फिर सब साथ बैठकर रोवेंगे।

[सभी ठहाका मार कर हसते हैं।]

राजेन्द्र प्रसाद · (कुछ सोच कर) तो हलुए की तय रही।

सभी · (एकमत होकर) *और क्या*।

राजेन्द्र प्रसाद परन्तु यह तो कल ही सभव होगा, आज तो एकादशी है।

[सभी एक दूसरे का मुह ताकने लगते हैं।]

वीरचन्द्र . (मुस्करा कर) देखा महेन्द्र तुम्हारी बात की करामात। यह पण्डितजी के किस्से की प्रतिक्रिया है।

महेन्द्र : इससे क्या हुआ। एकादशी ही है, एकासणा तो नहीं ?

राजेन्द्र प्रसाद : आप अन्यथा क्यो समझ रहे हैं, आज नही तो कल ही सही।

महेन्द्र : पर कल आये किसको ? फिर एकादशी से बढकर व्रत ही कौन-सा होता है, आज का फलाहार यही सही।

वीरचन्द्र : फलाहार से काम नहीं चलेगा। खैर, हलुवे की मा रवडी से काम चला लेंगे।

महेन्द्र : इसमे कहने की क्या बात है ? रवडी, फल, शाकाहार आदि सभी से तो एकादशी सफल होती है।

वीरचन्द्र : हा, एकादशी से तात्पर्य है कि अन्न को छोडकर सुबह से लेकर शाम तक कुछ न कुछ चरते रहो।

महेन्द्र : वाह भाई ! खूब कही।

वीरचन्द्र : तुम क्यों चौंकते हो ? एक बात सुनी होगी तुमने एकादशी माहात्म्य की ?

महेन्द्र : अब सुना दो।

वीरचन्द्र : हा, सुनानी ही पड़ेगी क्योकि बिना प्रमाण आजकल किसी भी तथ्य को मान्यता नहीं दी जाती।

महेन्द्र : क्या तुम रवड़ी से भी छुटकारा दिलवाओगे ? हलुए का किस्सा सुनाकर एकादशी बीच मे आ पडी और एकादशी माहात्म्य सुनाकर तुम क्या करवाना चाहते हो ?

राजेन्द्र प्रसाद : (मुस्करा कर) नही ऐसी बात नहीं है। यह तो आपका घर है।

महेन्द्र : फिर तो एकादशी-माहात्म्य सुना दो।

वीरचन्द्र : बात यह है कि एक ब्राह्मण किसी सेठ के यहा घरेलू-कार्य करता था। एकादशी के दिन सेठ के कहने से उसने एकादशी का व्रत रख लिया। सुबह उसे ठडाई की गिलास मिली। दोपहर को भर-पेट रवड़ी, फल आदि

श्रौर शाम को दूध का गिलास।

राजेन्द्र प्रसाद : (हंसकर) यह क्रम तो द्वादशी से भी बढ़कर हो गया।

महेन्द्र . यह क्रम कई वर्षों तक चला। पर दुर्भाग्यवश उसने नौकरी छोड़ दी श्रौर एक श्रन्य व्यापारी के यहां नौकर हो गया।

राजेन्द्र प्रसाद : तो घर पर थोड़े ही बैठा रहना। घर बैठे रहने से तो फिर असली एकादशी हो जाती।

महेन्द्र : सुनिये तो सही। एक दिन सेठ ने पूछा कि महाराज व्रत रखेंगे, इस पर पंडितजी ने हां भर ली। किन्तु ग्यारह बज गए पर न तो चाय मिली, न दूध श्रौर न ठंडाई, इस पर पण्डितजी ने होशियारी से सेठ को कहा, 'प्यास लगी है।'

वीरचन्द्र : इसमें पूछने की क्या बात थी ? पानी पी लेता।

महेन्द्र : परन्तु उसे तो ठंडाई आदि की याद दिलवानी थी।

वीरचन्द्र · तो मिला कुछ ?

महेन्द्र . मिलता क्या ? उत्तर मिला कि पानी पी लीजिए श्रौर वह पानी था उबाल कर रखा हुआ।

[सब हंसते हैं]

वीरचन्द्र · पण्डितजी को एकादशी का महत्त्व समझ में श्रा गया होगा ?

महेन्द्र : हां, श्रौर सेठ को भी समझा दिया गया।

राजेन्द्र प्रसाद : कैसे ?

महेन्द्र बात यह हुई कि करीब तीन बजे दिन को उनके घर के श्रागे से किसी की श्रर्थी जा रही थी, इस पर सेठ ने पण्डितजी से कहा—जरा देखिए तो कौन मरा ?

वीरचन्द्र : पण्डितजी ने वहीं खड़े-खड़े उत्तर दे दिया होगा ?

महेन्द्र : नहीं। वे बाहर गए और तत्काल ही वापस श्राकर

कहा, 'सेठ साहब, मरा तो कोई एकामरो वाला ही है, एकादशी वाला तो मर नही सकता।'

[इस पर सब ठहाका मार कर हमते हैं। उसी समय रमेशचन्द्र प्रवेश करता है। सभी उसे देखकर प्रसन्न होत हैं। वे उसे बधाई देते हैं किन्तु पिता की उपस्थिति के कारण वह सकोचवश उत्तर नही दे पाता। उसके हृदय मे उथल-पुथल मच रही है।]

राजेन्द्र प्रसाद : (प्रसन्नता से) ग्राग्रो रमेश, बैठो, कल कैसे नही ग्राये ?

रमेशचन्द्र : (गहरी नि श्वास छोड कर) क्या बताऊ ? सीमा का निरीक्षण करने गया था।

राजेन्द्र प्रसाद : क्या कोई विशेष बात थी ?

रमेशचन्द्र : विशेष ही नहीं, विशेष से भी ग्रधिक। हमारे राष्ट्र की सीमा पर—उन दानवो ने आक्रमण कर दिया है। हमारी सेना भी ईंट का जवाब पत्थर से दे रही है ग्रौर मुझे कुछ प्रबन्ध करना है।

राजेन्द्र प्रसाद : तुम थके हुए हो, पहले स्नान आदि से निवृत्त हो जाग्रो फिर सभी उपस्थित-बन्धुग्रो का आज मुह मीठा करवायें और कल एक भोज का प्रबन्ध किया जावेगा। हमारे घर मे तीस वर्षों के बाद थाली बजी है।

रमेशचन्द्र : (भावावेश में ग्राकर) नहीं, यह कदापि न होगा।

महेन्द्र : क्यों भावुक बन रहे हो ? पुत्र-जन्मोत्सव पर तो दिल खोल कर भोज करवाना चाहिए।

रमेशचन्द्र : (भौहें तान कर) ग्राप लोगों को खाने-खिलाने की पड़ी रहती है।

धीरचन्द्र : ग्रभी तो भोजन-पुराण ही चल रहा है।

रमेशचन्द्र : बस ! आप तो इन भोजन-भट्टों की कथाग्रों को आदर्श

मान बैठे हैं। देश-काल का कुछ भी ध्यान नही है आप लोगो को।

महेन्द्र · पर पहले अपना ध्यान तो रखें।

रमेशचन्द्र · मजाक छोडिये। आज हमारे ऊपर विकट सकट छाया हुआ है। एक ओर अन्न का एक-एक दाना मूल्यवान है और दूसरी ओर आप अन्न-व्यय करने पर तुल हुए हैं। व्यर्थ का अन्न-व्यय करना राष्ट्र-द्रोह से कम जघन्य अपराध नही है।

महेन्द्र किन्तु पुत्र जन्म से बढकर दूसरा कौन सा उत्सव मनाया जावेगा ? ऐसे अवसरों पर ही तो अन्न का मूल्य आंका जाता है।

रमेशचन्द्र झूठ, बिलकुल झूठ। जन्मना और मरना तो होना ही रहता है, यह तो ससार का क्रम है किन्तु भोज का खुशी से सम्बन्ध जोडना आज की परिस्थितियों के प्रतिकूल है।

महेन्द्र आज आज तो छूट दे दो अपने सिद्धान्त म।

रमेशचन्द्र नही, कदापि नहीं आज से तो हमे सप्ताह मे अधिक नही तो एक समय का भोजन बचाना चाहिए, एक दिन व्रत रखना चाहिए।

वीरचन्द्र और आज है भी एकादशी।

रमेशचन्द्र हमी मे टल्ने स काम नही चलेगा। हमे गभीरता स इस समस्या पर विचारना होगा।

महेन्द्र क्या हमारे थोड़े से अन्न बचाने म खाद्य समस्या का समाधान हो जायेगा ?

रमेशचन्द्र होगा क्यों नही आखिर बूद बूद से ही तो घडा भरता है। सभी को इसी प्रकार सोचना होगा। हमे सभी को वास्तविकता का ज्ञान कराना होगा।

वीरचन्द्र देखो रमेश, तुम हमारे बीच मे बाधक मत बनो। पहले

खा पी लें फिर तुम्हारा उपदेश कान खोलकर सुन लेंगे।

रमेशचन्द्र : (डाटकर) चुप रहिए। मैं कुछ नही सुनना चाहता। आप हलुवा, रबडी व मिष्टान्न खाएगे—गुलछर्रे उडावेंगे और हमारे अन्य भाई एक समय व्रत करके आपके लिए अन्न बचावेंगे !

राजेन्द्र प्रसाद . (कुछ सोचकर) तो जैसा तुम कहोगे, वैसा ही होगा।

वीरचन्द्र · तब हम चलें।

रमेशचन्द्र : नही, मैं ऐसा नहीं कह सकता। देखिए आपकी मुझ पर सदैव कृपा रही है। परन्तु आज आप ऐसा क्यों सोच रहे हैं ?

महेन्द्र · और तुम हम पर थोडी सी कृपा भी नही कर सकते ?

रमेशचन्द्र . मैं तो आपका बच्चा हू। पर······(कुछ रुककर) आपको मुझे नही ''नही, राष्ट्र के कर्णधारो को सहयोग देना होगा, प्रतिज्ञा करनी होगी कि जब तक राष्ट्र पर सकट रहेगा, देश की खाद्य-स्थिति नहीं सुधरेगी, हम कही किसी प्रकार के भोज मे शामिल नहीं होंगे।

महेन्द्र : रमेश !

रमेशचन्द्र : जो मैं आपसे निवेदन करता हू कि खुशी या गमी का सम्बन्ध होता है मन से। भोज के होने न होने से कोई अन्तर नही पडता।

राजेन्द्र प्रसाद तो तुम जैसा चाहते हो वैसा ही होगा।

रमेशचन्द्र : आज हमे हर प्रकार की कुर्बानी के लिए तयार रहना है—त्याग की बलिवेदी पर अपने-आपको चढ़ा देना है—अपनी मातृ-भूमि के लिए सर्वस्व न्योछावर कर देना है। आज 'फूल्स फीस्ट एण्ड वाइजमेन ईट'' का युग नही रहा, आज 'फूल्स फीस्ट एण्ड फूल्स ईट' समझना चाहिए।

मान बैठे हैं। देश-काल का कुछ भी ध्यान नहीं है आज लोगों को।

महेन्द्र · पर पहले अपना ध्यान तो रखें।

रमेशचन्द्र · मजाक छोड़िये। आज हमारे ऊपर विकट संकट छाया हुआ है। एक ओर अन्न का एक एक दाना मूल्यवान है और दूसरी ओर आप अन्न-व्यय करने पर तुले हुए हैं। व्यर्थ का अन्न-व्यय करना राष्ट्र-द्रोह से कम जघन्य अपराध नहीं है।

महेन्द्र . किन्तु पुत्र जन्म से बढ़कर दूसरा कौन सा उत्सव मनाया जावेगा? ऐसे अवसरों पर ही तो अन्न का मूल्य आंका जाता है।

रमेशचन्द्र झूठ, बिल्कुल झूठ। जन्मना और मरना तो होना ही रहता है, यह तो संसार का क्रम है किन्तु भोज का खुशी से सम्बन्ध जोड़ना आज की परिस्थितियों के प्रतिकूल है।

महेन्द्र आज आज तो छूट दे दो अपने सिद्धान्त में।

रमेशचन्द्र नहीं कदापि नहीं आज से तो हम सप्ताह में अधिक नहीं तो एक समय का भोजन बचाना चाहिए, एक दिन व्रत रखना चाहिए।

धीरचन्द्र और आज है भी एकादशी।

रमेशचन्द्र हँसी में टालने से काम नहीं चलेगा। हमें गंभीरता से इस समस्या पर विचारना होगा।

महेन्द्र क्या हमारे थोड़े से अन्न बचाने से खाद्य समस्या का समाधान हो जायेगा?

रमेशचन्द्र होगा क्यों नहीं आखिर बूंद बूंद से ही तो घड़ा भरता है। सभी को इसी प्रकार सोचना होगा। हमें सभी को वास्तविकता का ज्ञान कराना होगा।

धीरचन्द्र देखो रमेश, तुम हमारे बीच में बाधक मत बनो। पहले

खा पी लें फिर तुम्हारा उपदेश कान खोलकर सुन लेंगे ।

रमेशचन्द्र : (डाटकर) चुप रहिए । मैं कुछ नही सुनना चाहता । आप हलुवा, रबडी व मिष्टान्न खाएंगे—गुलछर्रे उडावेंगे और हमारे अर्थ भाई एक समय व्रत करके आपके लिए अन्न बचावेंगे ।

राजेन्द्र प्रसाद : (कुछ सोचकर) तो जैसा तुम कहोगे, वैसा ही होगा ।

वीरचन्द्र : तब हम चलें ।

रमेशचन्द्र : नही, मैं ऐसा नही कह सकता । देखिए आपकी मुझ पर सदैव कृपा रही है । परन्तु आज आप ऐसा क्यो सोच रहे हैं ?

महेन्द्र : और तुम हम पर थोडी सी कृपा भी नही कर सकते ?

रमेशचन्द्र : मैं तो आपका बच्चा हू । पर······(कुछ रुककर) आपको मुझे नही "नही, राष्ट्र के कर्णधारों को सहयोग देना होगा, प्रतिज्ञा करनी होगी कि जब तक राष्ट्र पर सकट रहेगा, देश की खाद्य-स्थिति नही सुधरेगी, हम कही किसी प्रकार के भोज मे शामिल नही होंगे ।

महेन्द्र : रमेश !

रमेशचन्द्र : जी, मैं आपसे निवेदन करता हू कि खुशी या गमी का सम्बन्ध होता है मन मे । भोज के होने न होने से कोई अन्तर नही पडता ।

राजेन्द्र प्रसाद तो तुम जैसा चाहते हो वैसा ही होगा ।

रमेशचन्द्र : आज हमे हर प्रकार की कुर्बानी के लिए तयार रहना है—त्याग की बलिवेदी पर अपने-आपको चढा देना है—अपनी मातृ-भूमि के लिए सर्वस्व न्योछावर कर देना है । आज 'फूल्स फीस्ट एण्ड वाइजमेन ईट" का युग नही रहा, आज फूल्स फीस्ट एण्ड फूल्स ईट' समझना चाहिए ।

महेन्द्र : (गभीरता से) रमेश, तुमने हमारी आंखें खोल दी। हमे कर्तव्य का पाठ पढ़ाया। हम तुम्हारे साथ हैं—देश के साथ हैं।

रमेशचन्द्र : (सहर्ष) तब आपको भी इस महायज्ञ में सक्रिय भाग लेना है।

महेन्द्र व वीरचन्द्र. (सोल्लास) हम तैयार है—तैयार हैं।

[सभी एक दूसरे से गले मिलते हैं।]

[पटाक्षेप]

मेहनताना

महेन्द्र : (गभीरता से) रमेश, तुमने हमारी आखे खोल दी हमे *कर्तव्य का पाठ पढाया* । हम तुम्हारे साथ हैं—दे के साथ हैं।

रमेशचन्द्र : (सहर्ष) तब आपको भी इस महायज्ञ मे सक्रिय भा *लेना है* ।

महेन्द्र व वीरचन्द्र (सोल्लास) हम तैयार हैं—तैयार हैं।

[सभी एक दूसरे से गले मिलते हैं।

[पटाक्षेप]

मेहनताना

महेन्द्र : (गभीरता से) रमेश, तुमने हमारी आँखें खोल दीं। हमें कर्तव्य का पाठ पढ़ाया। हम तुम्हारे साथ हैं—देश के साथ हैं।

रमेशचन्द्र : (सहर्ष) तब आपको भी इस महायज्ञ में सक्रिय भाग लेना है।

महेन्द्र व वीरचन्द्र (सोल्लास) हम तैयार हैं—तैयार हैं।

[सभी एक दूसरे से गले मिलते हैं।]

[पटाक्षेप]

पानी भी नही मागता।

रूपा आपने भी तो नही समझाया उसे।

हरखू मैं क्या समझाता ? थानेदार जी ने कहा था कि हा भरने से छूट जायेगा हाकिम साहब बडे दयालु हैं आज ही छोड देगे।

रूपा खैर अब जाने दो इन बातो को। (रुधे हुए कण्ठ से) पानी लाऊ ?

हरखू ले आओ। फिर मैं सुखू को ढू ढने जाता हू।

रूपा कहा जायेंगे ? कोई चार छ साल का थोडे ही है। पूरा जवान है।

हरखू कही तालाब की ओर तो नही चला गया ?

रूपा वह आपके बिना अकेला कभी कही नही जाता और तैरना भी तो अच्छी तरह जानता है।

हरखू तैराक तो है पर तैरु री राड पहले होवै है।

रूपा अच्छा तो मैं पानी ले आती हू।

[रूपा का प्रस्थान]

हरखू (फिर सोचने लगता है) दिन जाते क्या देर लगती है। कल की बात है। सुखू को जेल हुई। डेढ वर्ष काट कर आया अब बेचारा मुझे मदद देता है। मेरा तो बुढापे का सहारा ही है। दिन भर मजदूरी करता है। कभी डेढ और कभी दो की कमाई कर ही लाता है। बस इतने मे दाने तो सुख के मिल ही जाते है। -- पैसे पैसों का क्या करना है हमे—कोई महल तो बनाना नही। हमारे बाप दादा भी इसी कुटिया म अपना जीवन बिता गए। मैं भी इसी मे पाव पसार दू गा।

[इतने मे सुखू आता है।]

हरखू कहा रह गए थे बेटा ? मैं तो फिक्र कर रहा था।

सुखू कहीं नहीं। योंही थोडी देर हो गई।

हरखू किसी से लडाई झगडा तो नहीं हो गया ?

सुखू नहीं तो।

हरखू तो क्या तालाब स्नान करने गये थे ?

सुखू स्नान करने तो नहीं गया था परन्तु जब मैं घर आ रहा था तो डूबते हुए एक बच्चे को बचाया जरूर। फिर उसके घरवाले मुझे अपने साथ ले गए।

हरखू यह तो बहुत अच्छा किया तुमने। डूबते हुए को बचाना अपना धर्म है।

सुखू (अंगोछे मे से कुछ नोट निकाल कर पिता के आगे रखते हुए) लीजिये उस लडके के पिताजी ने ये एक सौ रुपये दिये हैं।

हरखू सुखू तूने यह अच्छा काम नहीं किया। क्या किसी को बचाने के बदले में पैसे लिये जाते हैं ?

सुखू मैंने तो नाहीं कर दी थी पर उन्होंने जबरदस्ती मेरी जेब मे डाल दिये। मैं फिर फेंक थोडे ही देता।

हरखू कहां है उनका मकान ?

सुखू थोडा दूर है।

हरखू चल मेरे साथ।

सुखू चलिए।

[इतने में रूपा पानी लेकर आती है। हरखू पानी पीता है। फिर वे प्रस्थान करने लगते हैं।]

रूपा क्या फिर यह किसी से लड़ आया है ?

हरखू नहीं।

रूपा तो कहां ले जा रहे हैं आप इसे।

हरखू कहीं नहीं थोडा काम करके आते हैं। डरो मत।

[दोनों का प्रस्थान।

पात्र

कालू एक पढा लिखा चमार नवयुवक

रामलो कालू की जाति की एक लडकी

आज जमाना बदल गया है `` `बदलता नहीं तो मैं कागज तक कैसे पहुँचता (चुप हो जाता है) ``````(फिर उठकर) (इधर उधर दृष्टिपात करते हुए) तो क्या अब मेरे जीवन मे कुछ शेष नही रहा ? • चमार हू तो क्या मुझे जीने का हक नहीं है ? कहा (जोर से) से लाऊगा मैं दो हजार रुपये दण्ड के `` उफ ?

[इतने मे दरवाजे पर खटखट की आवाज आती है। वह शकित भाव से दरवाजा खोलता है । एक बाला प्रवेश करती है ।]

कालू (एक नि श्वास छोडते हुए) मेरी राम ! कैसे आई हो ?

रामली (लज्जित सी होकर) हमारे फूटे भाग को बताने के लिए ।

कालू (उसकी ओर अविश्वास की दृष्टि से देखते हुए) क्या कहा, क्या वही फैसला रहा ?

रामली हा। तीन दिन और तीन रात तक पचायत हुई और • ``

कालू मैंने तो पहिले ही कहा था कि यहा होना जाना कुछ नहीं ।

रामली पर बिरादरी के नियम • —

कालू बिरादरी के थोथे नियम अब ढोंग हो गए हैं।

रामली तो अब क्या करें ?

कालू अब ! अब तुम्हारा और मेरा यहा रहना मुश्किल हो गया है। तुम्हारे मा बाप और ससुराल वाले मेरे खून क प्यासे हो गए है ।

रामली राम रे राम ! आप भी उ ह मेरे ससुराल वाले मानते हैं ? मा कहती है कि जब मैं दो वर्ष की थी तभी मेरी शादी कर दी गई । भला तुम्ही बताओ उस समय मैं क्या जानू ? (बात बदलते हुए) हा, आपने आखिर यह पचायत बुलाई ही क्यो ?

कालू • मुझे क्या पता कि ये लोग सरकार के कानून से भी बढ़कर फैसला दे गे ।

रामली : सरकार का क्या कानून है ?

कालू . कानून साफ है। कोई भी जोडी हाकिम के सामने जाकर अपना विवाह कर सकती है।

रामली : फिर क्या 'वैर चुकाना नहीं पडता ?

कालू : वैर किस बात का ? फिर तो 'मेल' हो जाता है। (मुस्कराता है)

रामली : तो हम भी हाकिम के सामने चलें—सरकार माई बाप है।

कालू पचायत ने सारा फैसला क्या सुनाया ?

रामली : सुनाया क्या (आवेश मे आकर) हमारा तो दिल ही निकाल लिया। जब मैंने फैसला सुना तो मरते-जैसी हो गई।

कालू : राम ! अब उपाय ही क्या है ?

रामली · उपाय ?

कालू . (निश्वास छोडते हुए) मुझे क्या पता था कि न्याय के नाम पर मौत का हुक्म सुनाया जायगा।

रामली दो हजार रुपयो का जुर्माना हमारे लिए तो मौत का हुक्म ही है।

कालू : हमारे पास दो सौ रुपये का भी तो माल नही है।

रामली : मेरी मा जिसने मुझे दूध पिलाया अब मुझसे बात करने मे भी पाप समझती है। जब से पचायत बैठी है मुझे धरती सुलाया जाता है, रोटी हाथ मे दी जाती है जैसे मैंने कोई मिनख मार दिया है।

कालू : (मुस्करा कर) क्या अब भी मिनख मारना बाकी रह गया है ? मुझे नही मारा ?

[दोनों जोर से हसते हैं व एक दूसरे के समीप हो जाते हैं।]

कालू : (पुन बात को प्रारम्भ करते हुए) अच्छा बता तो जरा पंच कौन कौन थे ?

रामली · मोहन डयोजी गल्ला, रावत, गुणपत, होठना व ओमला।

मरना…मरना ही एक उपाय है। अब एक बार मेरी ओर देख लो। आज का मिलन………(रामली का हाथ पकड कर) एक बार मरना तो है ही फिर इसमें सोच किस बात का ?

[कोलाहल निकट सुनाई देने लगता है।]

रामली : (भयभीत होकर) अरे ! यह तो ………

कालू · (हडबडा कर)ऐ ……ऐ ……भीड तो पास ही आ गयी है। अ……ब……

रामली (इधर उधर देखकर) ऐ ……ऐ ……

[इतने मे भीड पास आ पहुँचती है। कालू लाठी ढूढ़ता है। कुछ ही क्षणो मे झोंपडी आग की लपटो म स्वाहा होती-सी दिखाई पडती है।]

[पटाक्षेप]

• •

पहले कहते तो...

• •

बद्री चौबीस घण्टे बाद तो साप का काटा हुआ व्यक्ति खतरे से बाहर हो जाता है। जिस प्रकार चौदह घण्टे निकल गए उसी प्रकार दस घण्टे और निकल जायेंगे।

केदार ठीक है पर तु मेरे लिए तो एक एक क्षण निकलना भी कठिन हो रहा है। [आसू बहाता है।]

बद्री (उसके आसू पोछते हुए) अरे बच्चो की तरह क्यो रो रहे हो ? देखो तुम्हारे पास के पलग पर लेटा हुआ बारह वष का बच्चा भी नही रोता। फिर तुम्हारे शरीर म तो जहर क लक्षण भी नजर नही आत।

केदार कैसे ?

बद्री डाक्टर साहब न जिस समय तुम्हारे बायें हाथ पर इजे क्शन लगाया था तो कहा था कि यदि जहर का प्रकोप होगा तो कुछ समय बाद दाहिने हाथ पर जहरी फफोला हो जायेगा।

केदार (कुछ आश्वस्त होकर) भइया, मेरी एक विनती है सुनोगे ?

बद्री कहो, क्या कहना चाहते हो ?

केदार मैं चाहता हू कि मरने के बाद मेरी मिट्टी खराब न की जाय, मेरी लाश का चीर फाड न किया जाय। (रोने लगता है)

बद्री (चुप रहने का इशारा करते हुए) कैसी बातें करते हो अस्पताल पीडा दूर करने के लिए है मारने के लिए नही।

केदार आपको क्या पता। यमराज तो जिन्दो को मारता है, पर ये डाक्टर लोग मरे हुओ को भी फिर मारते हैं।

बद्री पर यह कैसे ?

केदार : जीवित रोगी के शरीर की तो चीर-फाड करते ही हैं, मरे हुए को भी ये नही छोडते ।

बद्री . कैसी बातें करते हो ? धैर्य रखो, भगवान् सब ठीक करेंगे, राम राम जपो।

केदार : उफ, मरा !

बद्री : पर केदार क्या तुमने साप को देखा था ?

केदार : हा, जब मैं पानी भर रहा था ···उफ ···मटकी मे कहा से आ गया ? वह तो मेरा काल था, काला कलन्दर।

बद्री : पर पडोसी तो कह रहे थे कि तुम उस साप को दो दिन पहले पकड कर लाए थे और उससे खेल खेलते थे। खेलते समय ही उसने तुम्हें काटा है।

केदार · (बीच मे ही कराहते हुए) हाय राम !

बद्री . देखो केदार ! सर्पों से खेल नही खेलना चाहिए—साप का कोई रिश्तेदार नहीं होता—उनका विश्वास नही करना चाहिए दुष्ट व्यक्ति और साप मे कोई भेद नही होता।

केदार नहीं भाई, मैं आजकल स प पकडता ही नही हू पडोसी तो मुझ पर लगाते हैं।

बद्री : अच्छा यह तो ठीक है पर केदार मेरी एक बात मानोगे ?

केदार : हा, क्यो नहीं, आप मेरे बडे भाई हैं—पिता की जगह हैं। आप जो कहेंगे वही करूंगा। परन्तु मैं जिन्दा नही रह सकता। (आखों से फिर आसू बहाता है)

बद्री : आज ये लोग खुश हो रहे हैं जिनके घर मे तुम छोड देते थे, जिन्हें पैसों के लिये तुम तग करते थे

केदार · (वेदना से) सच है भैया। सच

मुनीम शर्म नही आती ऐसे लोगो को !

सेठ पर मैने भी ठीक ही कहा। लोगो की बातों का तो आजकल विश्वास ही नही करना चाहिए। जब मुक्तामल जीवित था तब करोड़ीमल जहा भी मिलते ता उसके रोने रोते।

मुनीम ठीक फरमा रहे हैं आप। जब मिलते उसके ही रोने रोते। कभी कहते चोर है कभी कहते जुआ खेलता है, कभी कहते कि ऐसे नालायक लडके का तो मर जाना ही अच्छा है।

सेठ और उसके मरने के बाद अब दिखावटी शोक दिखलाते हैं। वसन्त ने सच्ची बात कह दी तो बुरा मान गए। उपालभ कहलवाया।

मुनीम यह नही सोचते कि उसके मरने से पुलिस कचहरी के चक्कर लगाने से तो छुटकारा मिल गया। नही तो ऐसे कुपुत्र के कारण वकीलो के घर चक्कर लगाते-लगाते हैरान हो जाते।

सेठ इतना ही क्यों, क्या कभी उन्हे नहीं फसा देता ?

[इतने मे इत्र फुलल की पेटी बगल मे दबाये गन्धी पोपटलाल का प्रवश।]

गन्धी (प्रवेश करके) जय श्री कृष्ण सेठजी।

सेठ जय श्री कृष्ण। आइये, कहा से आए हैं ?

गन्धी आया तो कन्नौज से हू। आपका नाम सुनकर बहुत बढ़िया इत्र फुलेल लाया हू। सोचा कुछ बिक्री हो जायेगी।

सेठ (घडी देखकर) अरे तो सवा बारह बज रहे हैं ? (गन्धी को लक्ष्य कर) थोडी देर ठहरिये, मैं अभी आता हू।

[घर मे चला जाता है। इसी समय घर में से वसन्तमल आता है।]

वसन्तमल : (प्रवेश करके इधर-उधर दृष्टिपात करता है, फिर गांधी से) आप इत्र बेचते हैं ?

गन्धी : जी।

वसन्तमल : तो कोई अच्छा-सा दिखलाइये। अच्छा होगा तो ले लेंगे।

गन्धी : (फवा बनाकर देते हुए) देखिये यह गुलाब की रूह है। सबसे बढ़िया है।

वसन्तमल : (हाथ मे लेकर मुह मे डाल कर चूमने लगता है, फिर एक क्षण में ही फवा फेंक कर थू थू करते हुए) गान्धी जी, यह क्या इत्र है ? मेरा तो मुंह खराब करा दिया आपने, कैसी हो रही है।

गन्धी : (हड़बड़ाकर अपनी पेटी बगल में दबाते हुए) अच्छा तो बढ़िया इत्र लेकर उपस्थित होऊगा।

[गन्धी चलने का उपक्रम करता है। वसन्त घर मे चला जाता है। उसी समय सेठ किसी आवश्यक कार्यवश दीवान-खाने में आता है।]

सेठ : (गन्धी को हड़बड़ा कर जाते हुए देखकर) क्यों गान्धीजी इतने शीघ्र कैसे चल दिये ? हमारे लायक कोई बढ़िया इत्र हो तो दिखलाइये।

गन्धी : (बैठकर पेटी खोलता है। फिर फवा बनाकर देते हुए) लीजिये, यह गुलाब की बढ़िया से बढ़िया रूह है। इसका फवा बनाकर कुवर साहब को दिया था।

सेठ : उसे पसन्द नहीं आया होगा। यह तो अपनी-अपनी पसन्द है। मुझे पसन्द आयेगा तो कुछ ले लूंगा।

गन्धी : इसमें पसन्द-नापसन्द जैसी तो कोई बात नहीं है। इससे बढ़िया रूह तो कहीं मिल ही नहीं सकती। कुंवर साहब तो फवे को चूमने लगे इसलिए.........

सेठ : (आश्चर्य से) क्या कहा ? ...